हे प्रभो! यह तेरापंथ

अभ्युदय

आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह 2013-2014

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा का परिपत्र

वर्ष 13 अंक 12 मार्च 2014

संबोध

हमारी दुनिया में श्रेय और प्रेय दोनों प्रकार के तत्व हैं। प्रेय अच्छा तो लगता है, किन्तु वह कल्याणकारी हो, यह जरूरी नहीं है। श्रेय प्रिय भले न हो, किन्तु वह कल्याणकारी होता है। श्रेय और प्रेय दोनों का ज्ञान करने का प्रयास करना चाहिए। उसके पश्चात आचरणीय को ग्रहण करना चाहिए तथा अनाचरणीय के परित्याग का प्रयास करना चाहिए। जिस व्यक्ति में हेय और उपादेय का विवेचन करने की शक्ति होती है, वह अध्यात्म के क्षेत्र में आगे बढ़ सकता है और व्यावहारिक जीवन में भी अपना विकास कर सकता है। व्यक्ति प्रवचन सुनता है और उसमें दिए गए संबोध को श्रवण करने के पश्चात यदि हेय को छोड़ने और उपादेय को ग्रहण करने का प्रयास हो तो सुनना अधिक सार्थक हो सकता है।

साधु की साधना का महत्व होता है, इसलिए उनकी वाणी का महत्व होता है। उनके प्रवचन को सुनने का प्रयास करना चाहिए। आज कल घर बैठे टेलीविजन के माध्यम से प्रवचन सुना जा सकता है। मानो कुआं प्यासे के पास आ रहा है। सुनना अच्छी बात है, उसके साथ उसे हृदयंगम करने का प्रयत्न और भी महत्वपूर्ण हो जाता है। कई बार गुरु की एक बात भी समस्या का समाधायक बन जाती है। स्वाध्याय के द्वारा भी हेय और उपादेय का ज्ञान तथा समय का सदुपयोग किया जा सकता है। जीवन में समय के सदुपयोग का लक्ष्य रहना चाहिए। दिन-रात चौबीस घंटे का समय हर व्यक्ति को मिलता है। हमें सहज रूप से प्राप्त समय का अच्छा उपयोग करना चाहिए। निन्दा, गाली आदि में समय लगाना समय का तुच्छ उपयोग है। प्रवचन श्रवण, सत्साहित्य का स्वाध्याय, ध्यान, तत्त्वज्ञान आदि में समय का नियोजन समय का स्वच्छ उपयोग है। जो व्यक्ति समय का तुच्छ उपयोग करता है वह तुच्छ और जो समय का स्वच्छ उपयोग करता है, वह स्वच्छ बन जाता है।

किसी के द्वारा प्रशंसा और निन्दा करने मात्र से कोई बड़ा या छोटा नहीं बनता। व्यक्ति अपने आचरण के द्वारा छोटा या बड़ा बनता है। आलोचना तो अच्छे व्यक्ति और अच्छे कार्य की भी हो सकती है। आलोचना से डरना नहीं चाहिए। यदि आलोचना में सारपूर्ण बात है तो उसे स्वीकार कर लेना चाहिए तथा निःसार बात का भार मस्तिष्क में नहीं रखना चाहिए और सत्पथ पर आगे बढ़ते रहना चाहिए।

आचार्य महाश्रमण

16वीं लोकसभा के आम चुनाव के अवसर पर
आचार्य श्री महाश्रमण द्वारा राष्ट्र के नाम संदेश

अर्हम्

चुनाव लोकतंत्र की रीढ़ है। जिस प्रकार शरीर की स्वस्थता के लिए रीढ़ का स्वस्थ होना आवश्यक है, इसी प्रकार लोकतंत्र की स्वस्थता के लिए चुनाव प्रणाली का भी स्वस्थ होना आवश्यक है। लोकसभा लोकतंत्र का मंदिर होता है। उसमें पहुँचने वाले सांसद कुशल एवं चरित्र संपन्न हों, यह अपेक्षा है। भारत की लोकसभा का चुनाव हमारे सामने है। परम पूज्य गुरुदेव तुलसी ने अणुव्रत आन्दोलन का सम्प्रवर्तन किया। उसमें प्रत्याशी और मतदाता के लिए भी अणुव्रत की आचार संहिता है –

प्रत्याशी अणुव्रत

1. मैं प्रलोभन और भय से मत प्राप्त नहीं करूँगा।
2. मैं प्रतिपक्षी प्रत्याशी का चरित्र हनन नहीं करूँगा।
3. मैं मतदान और मतगणना के समय अवैध तरीकों को काम में नहीं लूंगा।

मतदाता अणुव्रत

1. मैं प्रलोभन और भय से मतदान नहीं करूँगा।
2. मैं जाली नाम से मतदान नहीं करूँगा।

देश के प्रत्याशियों और मतदाताओं से हमारा अनुरोध है कि वे लोकसभा के चुनाव में अणुव्रत की आचार संहिता को अपने व्यवहार में प्रयुक्त करने का प्रयास करें।

आचार्य महाश्रमण

श्रीगंगानगर (राजस्थान)
16 मार्च, 2014

अध्यक्षीय

वरेण्य बंधुगण,

महासभा का लक्ष्य गुरुदृष्टि की आराधना करते हुए संपूर्ण तेरापंथ समाज को आत्मोत्कर्ष की दिशा में अग्रसर करने वाले कल्याणकारी कार्यों को निष्पादित करना है। इस उद्देश्य को ध्यान में रखकर महासभा अपनी सम्बद्ध सभी सभाओं के माध्यम से विभिन्न प्रकार के संगठनात्मक, साधनात्मक, शैक्षिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों का संचालन करती है ताकि संपूर्ण तेरापंथ समाज क्रमशः उन्नयन के पथ पर अग्रसर रहे।

अभ्युदय के पिछले अंक में हमने दायित्व ग्रहण के बाद की स्थितियों एवं फरवरी माह के दौरान संपन्न विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से महासभा के क्रियाकलापों की भावी दिशादृष्टि को सामने रखने का प्रयास किया था। महासभा अपने उद्देश्यों के अनुरूप विभिन्न परियोजनाओं की पूर्ति हेतु संकल्पित भाव से कार्य कर रही है।

महासभा के समक्ष इस समय सबसे गौरवशाली एवं महत्वपूर्ण कार्ययोजना है तेरापंथ धर्मसंघ के यशस्वी नवम आचार्य श्री तुलसी के जन्म शताब्दी समारोह से संबंधित विभिन्न परियोजनाओं को पूरी गरिमा और श्रद्धा-भक्ति के साथ कार्यान्वित करना। महासभा इस दिशा में पूरी जागरूकता और निष्ठा के साथ कार्यशील है और पूरे देश में आचार्य तुलसी के महान अवदानों से जन-जन को अवगत कराने हेतु अणुव्रत संकल्प यात्रा, आचार्य तुलसी से संबंधित विभिन्न कार्यक्रमों एवं अन्य गतिविधियों का संचालन कर रही है।

आचार्य तुलसी का व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व दोनों ही अनुपमेय था। वे सही अर्थों में महामानव थे। वे सदैव व्यापक मानवता के हित में चिंतन करते थे। उन्होंने जातिवाद और संप्रदायवाद का विरोध कर मानवीय एकता का मार्ग प्रशस्त किया था। उनके द्वारा प्रस्तुत अणुव्रत के सूत्र आज पूरी मानवता के लिए अत्यंत लाभकारी सिद्ध हो रहे हैं। संपूर्ण मानव जाति के अभ्युदय और विकास के लिए उनके द्वारा दिए गए पाथेय आज हमारे लिए मूल्यवान धरोहर बने हुए हैं।

आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह के दौरान आयोजित की जाने वाली विभिन्न परियोजनाएँ वर्तमान राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक और आध्यात्मिक परिदृश्य में विशेष रूप से प्रासंगिक हैं। उनकी शताब्दी मनाना न केवल गौरव की बात है, बल्कि हमारे लिए अनिवार्य आवश्यकता-सी बन गई है। उनके जीवन का हर पहलू हमारे लिए प्रेरणा का महान स्रोत बना हुआ है।

आचार्य श्री तुलसी ने अणुव्रत को केवल बाहर की आचार संहिता के रूप में नहीं, बल्कि हृदय को परिष्कृत करने की प्रविधि के रूप में प्रस्तुत किया, जिसका पालन कर संपूर्ण देश का चारित्रिक उन्नयन हो सकता है एवं समाज सही अर्थों में विकास के पथ पर अग्रसर हो सकता है। हम सभी तेरापंथियों का प्रयास हो कि गणाधिपति तुलसी द्वारा दिए गए उन महान अवदानों को अणुव्रत संकल्प यात्रा के माध्यम से प्रचारित-प्रसारित करने में सक्रिय सहयोगी बनें, यही उनके प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजलि एवं प्रणति होगी।

बंधुवर, देश में लोकसभा चुनाव के अवसर पर परम पूज्य आचार्य श्री महाश्रमण द्वारा राष्ट्र के नाम संदेश दिया गया है, जिसे हम अभ्युदय के इस अंक में प्रकाशित कर रहे हैं। यह संदेश हमें अपने कर्तव्यों के प्रति सचेष्ट होने और महान भारत के महान लोकतंत्र को सुदृढ़ करने की प्रेरणा देता है। उक्त संदेश में उद्धृत आचार्य तुलसी द्वारा प्रवर्तित प्रत्याशी अणुव्रत एवं मतदाता अणुव्रत हमें अपने मार्ग के चयन और राष्ट्र हित में योगदान करने की दिशा प्रदान करता है। हमारा पुनीत कर्तव्य है कि हम इन संकल्पों का पालन कर पूज्यप्रवरों द्वारा प्रदर्शित पथ पर निरंतर गतिमान रहें और राष्ट्र निर्माण में सात्विक सहयोग करें।

आइए हम संकल्प लें कि –

अणुव्रत के नियमों का पालन, हो पुनीत धर्म हमारा
विश्ववंद्य गुरुवर के मंत्र से उन्नत हो देश यह प्यारा

कमल कुमार दुगड़

प्रेरणा पाथेय

तनाव उनको होता है, जिनका स्वयं पर अनुशासन नहीं है। तनाव उन्हें सताता है, जिनका अपनी वृत्तियों पर नियंत्रण नहीं है। तनाव की समस्या उनके सामने है, जो स्वतंत्र नहीं, यंत्र हैं। उनके यांत्रिक जीवन की पहचान है दूसरों के मूल्यांकन पर अपना अंकन करना। किसी के कहने मात्र से अपने कार्य को अच्छा या बुरा मानने वाले व्यक्ति कभी तटस्थ चिन्तन नहीं कर सकते।

आचार्य तुलसी

वह समाज, वह समुदाय महत्वपूर्ण होता है, जहाँ नेतृत्व का मूल्य होता है। नेतृत्वविहीन समाज का बहुत ज्यादा मूल्य नहीं होता। सफलता, विकास, प्रगति – इन सबका एक मूल आधार है नेतृत्व। जिस समाज में नेतृत्व को स्वीकार करने की भावना नहीं होती, वह विकास नहीं कर सकता। जहाँ नेतृत्व है और उसे मानने की तत्परता है, वहाँ सब कुछ संभव होता है।... तेरापंथ को जो सफलता मिल रही है उसका मुख्य कारण एक नेतृत्व की परंपरा है।

आचार्य महाप्रज्ञ

वे धन्य हैं, जो नाम की भावना से नहीं, कल्याण की भावना से काम करते हैं। कार्यकर्ता पवित्र सेवा की भावना से कार्य करें, उनमें सहिष्णुता का भाव विकसित हो, उनके कान इतने सक्षम हों कि निन्दा, प्रशंसा, सब कुछ समभाव से सुन सकें। कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षण, प्रेरणा, प्रोत्साहन एवं पथदर्शन मिलता रहे तो वे अच्छे कार्यकर्ता बन सकते हैं और समाज के लिए उपयोगी व कार्यकारी सिद्ध हो सकते हैं।

आचार्य महाश्रमण

संपादकीय

सुहृदवर,

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा अपनी विगत उपलब्धियों को सामने रखते हुए भावी अभ्युत्थान के पथ पर निरंतर अग्रसर है और नई-नई परियोजनाओं के माध्यम से तेरापंथ समाज के सर्वविध उन्नयन हेतु पूज्यप्रवर द्वारा निर्दिष्ट दिशापथ पर अनवरत रूप से गतिशील है।

मार्च महीने के तृतीय सप्ताह में संपन्न महासभा की कार्यसमिति की बैठक में समाज के विकास हेतु अनेक महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए हैं, जिनकी अवगति अभ्युदय के इस अंक में दी जा रही है।

आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह के संदर्भ में महासभा के अध्यक्ष श्री कमल कुमार दुगड़ के मुख्य संयोजकीय नेतृत्व में आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह समिति द्वारा विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन कर तेरापंथ धर्मसंघ के नवम अधिशास्ता युगप्रधान आचार्य के महान अवदानों से संपूर्ण देश को अवगत कराने का प्रयास निरंतर जारी है, जिसकी सूचना इस अंक में दी जा रही है। सभाओं और पूरे समाज से अपेक्षा है कि आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी से संबंधित कार्यक्रमों के क्रियान्वयन में पूरी सक्रियता दर्शाएँ और महासभा के प्रयासों को सफल बनाने में योगभूत बनें।

बंधुवर, अभ्युदय के द्वारा संघ और समाज में निरंतर घट रही घटनाओं और विभिन्न क्षेत्रों एवं दिशाओं में आयोजित गतिविधियों की जानकारी पूरे तेरापंथस ामाजक ेत ाभीप्र ाप्तह ेस ाकतीहै ज ाबस ाभीस ाभाएंअ पने-अपने कार्यक्रमों एवं गतिविधियों की जानकारी नियमित रूप से महासभा को प्रेषित करेंगी। अतः सभी सभाओं से अनुरोध है कि वे अपनी सभा द्वारा आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों, विशेषकर आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह से संबंधित कार्यक्रमों, ज्ञानशाला संचालन आदि के बारे में सूचनाएँ तत्काल प्रेषित करने का प्रयास करें। यह ध्यान रखा जाए कि कोई भी समाचार पुराना न हो क्योंकि अभ्युदय का प्रकाशन प्रत्येक महीने हो रहा है और उसमें वही समाचार प्रकाशित किए जा रहे हैं जो उसी अवधि के हैं। आशा है, हमें सभी सभाओं से अपेक्षित सहयोग प्राप्त होगा।

पुनः, अभ्युदय में प्रकाशित सामग्री के संबंध में अपने विचारों एवं सुझावों से भी हमें अवगत कराते रहें ताकि इसके प्रकाशन की सार्थकता सिद्ध हो।

आशाहै ,ह मअ पनीस ाक्रियताए वंस ाजगतास ेअ पनेध ार्मसंघए वंस ामाज को उन्नयन के शिखर तक ले जाने में सहयोगी बनेंगे, इन्हीं मंगलकामनाओं के साथ,

सुरेन्द्र कुमार बोरड़

महासभा संवाद

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा की कार्यसमिति की बैठक

महासभा की नई शताब्दी की नई कार्यसमिति की प्रथम बैठक महासभा भवन में दिनांक 21.03.2014 को सानन्द संपन्न हुई, जिसमें सहभागिता हेतु देश भर से महासभा के सभी पदाधिकारियों, न्यास मंडल के सदस्यों तथा नव मनोनीत कार्यसमिति के सदस्यों, राज्य प्रभारियों एवं विभिन्न प्रवृत्तियों के संयोजकों तथा परामर्शकों के अलावा कोलकाता के विशिष्ट श्रावक समाज ने प्रतिभागिता की। संपूर्ण बैठक की कार्यवाही अत्यंत सौहार्दपूर्ण एवं सद्भावना के वातावरण में संपन्न हुई।

सर्वप्रथमअ ाएह ुएस ादस्यताअ ावेदनप ात्रोंप ारवि चारकेप ाश्चात महासभा के दो सहमंत्रियों, अवशिष्ट कार्यसमिति के सदस्यों क्षेत्रीय प्रभारियों एवं विभिन्न प्रवृत्तियों के संयोजकों एवं सह-संयोजकों की नियुक्ति की घोषणा की गई।

विचार-विमर्श के दौरान महासभा के अध्यक्ष श्री कमल कुमार दुगड़ ने अपने ओजस्वी अभिभाषण में कहा कि “तेरापंथ धर्मसंघ के आचार्योंके अ वदानोंस ेस ंपूर्णत ेरापंथीस मााजक ोअ वगतक राने तथा धर्मसंघ और समाज के हितों का संरक्षण करते हुए विगत एक शताब्दी से महासभा द्वारा संचालित की जा रही उल्लेखनीय गतिविधियों एवं व्यवस्थाओं को और भी सुदृढ़ता प्रदान करने के उद्देश्य से महासभा अपनी मूल प्रवृत्तियों, जैसे साधना, शिक्षा, संस्कार निर्माण, साहित्य, समन्वय, संवर्धन, संप्रसार, सहभागिता योजना, मेधावी छात्र प्रोत्साहन परियोजना आदि को क्रमशः उच्चतम सोपान तक पहुँचाने हेतु प्रयासरत है और आगामी दो वर्षों के कार्यकाल में तेरापंथ समाज को महासभा के माध्यम से और अधिक संगठित, सुदृढ़ और सशक्त बनाने के लिए अनेक महत्वपूर्ण कार्यों को क्रियान्वित करने हेतु संकल्पबद्ध है।

उन्होंने कहा कि पूज्यप्रवर की कृपा एवं ऊर्जा संचार से नव उत्साह ग्रहण करते हुए नूतन चिन्तन के साथ अतीत की उपलब्धियों को वृद्धिंगत कर नए शिखरों पर ले जाने के संकल्प के साथ हमें नवसृजन पथ पर कदम बढ़ाना है और इसके लिए हमारी पहली प्राथमिकता होगी संगठन को सुदृढ़ता प्रदान करना। हमारा समाज एक शक्तिशाली समाज है। दूर-दूर तक हमारे बंधु-बाधवों ने अपनी पहचान बनाई है। परन्तु हमारी शक्ति पूरी तरह से सुनियोजित हो इस दिशा में काफी कुछ करणीय है। बदलते हुए परिवेश, बढ़ती हुई अपेक्षाओं के मद्देनजर हमें समाज की ताकत को जोड़कर एकजुट करना है। उन्होंने गुरुदेव श्री तुलसी द्वारा रचित संघ गान की एक पंक्ति को उद्धृत किया, जिसमें आह्वान था –

संघ संपदा बढ़ती जाए,
प्रगति शिखर पर चढ़ती जाए।

उन्होंने महासभा के ध्येय सूत्रों का उल्लेख करते हुए कहा कि संघ संपदा संवर्धन, हमारा ध्येय सूत्र बने। इस हेतु हम चिन्तन करें और अपनी शक्ति और क्षमता का उस दिशा में नियोजन करें। हमारी संघीय स्थानीय स्तर की प्रमुख संस्था है तेरापंथी सभा। हर क्षेत्र की सभा अपने कर्म क्षेत्र और निकटवर्ती क्षेत्र में संघीय कार्यकमों का नियोजन करती है और महासभा द्वारा निर्दिष्ट गतिविधियों का संचालन करती है। समाज के आध्यात्मिक विकास का दायित्व भी सभा का है।

उन्होंने आचार्य तुलसी शताब्दी वर्ष और महासभा के दूसरी शताब्दी में प्रवेश के महान अवसर पर अगले दो वर्षों के दौरान 100 नई तेरापंथी सभाओं के गठन का संकल्प व्यक्त किया और कहा कि आज पूरे भारतवर्ष में लगभग 1529 स्थानों पर तेरापंथी परिवारर हतेहैं अ ौरत ेरापंथीस ाभाएँके वल5 12स थानोंप रहैं। अतः पूर्ववर्ती आचार्यों एवं आचार्यश्री महाश्रमण जी के अवदानों को व्यवस्थित रूप से समाज तक पहुंचाने के साथ-साथ समाज की सुदृढ़ व्यवस्था तथा आध्यात्मिक विकास को और अधिक शक्तिशाली बनाने हेतु आगामी दो वर्षों में महासभा ने एक सौ नई सभाएं गठन करने का संकल्प लिया है। जहां भी तेरापंथ के 13 परिवार प्रवासित हों वहां सभा का गठन किया जाए। इस हेतु उस क्षेत्र के आसपास निवास करने वाले महासभा के प्रतिनिधि, कार्यसमिति सदस्य, राज्यप्रभारी और आस-पड़ोस की सभाएं इस संबंध में महासभा को सूचित करें ताकि महासभा परिवार सभा गठन हेतु समुचित सहयोग और मार्गदर्शन कर सके।

उन्होंने सदन को सूचित किया कि सभा गठन हेतु प्रेरणा पत्र और प्रारूप पत्र तैयार कर लिया गया है, जिसे शीघ्र ही तेरापंथी सभाओं तथा कार्यसमिति सदस्यों इत्यादि को प्रेषित कर दिया जाएगा।

उन्होंने सभाओं की संख्या और गुणवत्ता दोनों में क्रमिक विकास की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा कि सभी सभाओं की सक्रियता और कार्यपद्धति में विकास हो इस हेतु हमें सलक्ष्य प्रयास करना है। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि सभाओं का संचालनम हासभाके नि र्धारितस ंविधानअ ौरप्र ारूपके अ नुरूप हो, क्षेत्र के समस्त परिवारों का सभा के साथ जुड़ाव हो तथा संघीय गतिविधियों और कार्यक्रमों का नियमित संचालन हो।

सभा गठन का प्रारूप

1. समाज के एक-दो व्यक्ति जिम्मेदारी लेकर समाज के सभी परिवारों को सूचित करें कि उस स्थान पर तेरापंथी सभा का

गठन करना प्रस्तावित है एवं एक निर्धारित समय पर एक बैठक उपयुक्त स्थान पर बुलाकर उपस्थित सभी सदस्यों के हस्ताक्षर एक रजिस्टर में करवाएं तथा यह निर्णय लें कि उक्त स्थान पर तेरापंथी सभा के गठन का निर्णय किया गया है।

2. सभा का नाम श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा .... (स्थानीय नाम) होगा।
3. स्थानीय स्तर पर तेरापंथी परिवार के सदस्य, जिनकी उम्र 18 वर्ष से अधिक हो, यदि सभा के सदस्य बनना चाहें तो उन्हें सदस्य बनाया जाए।
4. पहली बैठक में उपस्थित सदस्यगण अपने अध्यक्ष का चयन करें एवं उसके उपरान्त अध्यक्ष अपने पदाधिकारियों का चयन तथा कार्यसमिति का गठन करें। इसके उपरान्त महासभा द्वारा सभाओं के लिए निर्धारित प्रारूप के अनुसार संविधान बनाकर कार्यसमिति की बैठक में उसे पारित करें एवं अध्यक्ष या मंत्री को अधिकृत करें कि वे रजिस्ट्रार ऑफ सोसायटीज से उसे पंजीकृत (रजिस्ट्रेशन) करवाएं।
5. सभा की कार्यसमिति की बैठक में एफिलियेशन हेतु प्रस्ताव पारित करके प्रस्ताव की प्रति महासभा को प्रेषित करें ।
6. कार्यसमिति की बैठक में संविधान को स्वीकृत करने के उपरान्त महासभा द्वारा निर्धारित एफिलियेशन फार्म को भरकर महासभा के कोलकाता कार्यालय को प्रेषित करें ।
7. एफिलिएशन हेतु निर्धारित शुल्क रु. 5,100/- का ड्राफ्ट 'जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा' के नाम से बनवाकर महासभा को भिजवाएं।
8. कार्यसमिति सदस्यों की सूची फोन नंबरों सहित प्रेषित करें।
9. सभा के कुल सदस्यों की संख्या की जानकारी एवं उनकी सूची संलग्न करें ।
10. व्यवस्थित रूप से बैठक करके अत्यधिक आध्यात्मिक लाभ कैसे मिले इस पर चिन्तन-मनन करें।

कार्यसमिति की बैठक में संघ एवं समाज के सर्वांगीण विकास हेतु तेरापंथी समाज के प्रत्येक सदस्य की सक्रिय सहभागिता को सुनिश्चित करने हेतु चिंतन किया गया और संघीय संस्थाओं को जागरूक, मजबूत एवं सशक्त बनाने पर जोर दिया गया। इस संदर्भ में महासभा के अध्यक्ष श्री कमल कुमार दुगड़ द्वारा समाज की व्यवस्थाओं को दीर्घकाल तक सुदृढ़ रूप देने हेतु नई शताब्दी में चरण न्यास के क्षणों में महासभा द्वारा शताब्दी अक्षय निधि कोष की स्थापना का चिन्तन समाज के सम्मुख प्रस्तुत किया गया, जिसमें तेरापंथी समाज के सभी सदस्यों से इस संस्था के आर्थिक सुदृढ़ीकरण में सहभागिता करने का आह्वान किया गया था। उन्होंने कहा कि *"शताब्दी अक्षय निधि कोष"* की स्थापना का उद्देश्य है संपूर्ण समाज को कंधे से कंधा मिलाकर नव उन्मेषों के आरोहण में सहभागी-सहयोगी बनाना। इस कोष में अंशदान करके तेरापंथी समाज के प्रत्येक सदस्य के मन में दायित्व बोध का भाव विकसित होगा तथा सामाजिक व्यवस्था के सुदृढ़ीकरण में सहभागिता करके प्रत्येक परिवार के हर एक सदस्य को गौरव की अनुभूति होगी। एकरूपता एवं सुव्यवस्था की दृष्टि से प्रति सदस्य सहयोग राशि ग्यारह हजार प्रस्तावित है परंतु समाज के भाई-बहन अपनी भावना के अनुरूप अधिक या कम राशि का भी योगदान कर सकते हैं। मूल लक्ष्य समाज के प्रत्येक सदस्य की इस महान उपक्रम में सहभागिता है।

उन्होंने सदस्यों में ऊर्जा संचार करते हुए कहा कि हम संख्या में कम अवश्य हैं लेकिन शक्ति में नहीं। आज पूरे भारतवर्ष में तेरापंथियों की संख्या लगभग 4.50 लाख है। अगर 20 प्रतिशत सदस्य यानी 90 हजार सदस्य भी इस धर्मयज्ञ से जुड़ते हैं और अपने योगदान की आहुति देते हैं तो शताब्दी अक्षय निधि कोष केवल नाम से नहीं, अपने कर्म से भी सार्थक सिद्ध हो जाएगा। शताब्दी अक्षय निधि कोष के माध्यम से महासभा का कोष इतना सुदृढ़ हो जाएगा कि कोष को अक्षुण्ण रखते हुए, इसकी आय से समाज हित में महासभा द्वारा विभिन्न गतिविधियों का संचालन और समाज हित के अन्य प्रकल्पों का निर्माण किया जा सकेगा।

महासभा के अध्यक्ष ने सदन को सूचित किया कि शताब्दी अक्षय निधि कोष और सधार्मिक संपर्क अभियान के विषय में महासभा द्वारा एक परिपत्र देश-विदेश के समस्त तेरापंथी परिवारों को प्रेषित किया जा रहा है।

अध्यक्ष महोदय ने सधार्मिक सम्पर्क अभियान तथा शताब्दी अक्षय निधि कोष के लिए निर्धारित लक्ष्य के संबंध में अपना चिंतन प्रस्तुत करते हुए कहा कि स्थानीय सभाओं एवं कार्यकारिणी सदस्यों के माध्यम से व्यक्तिशः समाज के हर परिवार से सम्पर्क कर कार्य को गति दी जाएगी। देश भर में फैली 512 सभाओं एवं कार्यकारिणी सदस्यों में इस जिम्मेदारी को इस तरह से विभाजित किया जाएगा कि कार्यकारिणी का प्रत्येक सदस्य महासभा द्वारा सुनिश्चित की गई औसतन 5 सभाओं के साथ सम्पर्क बनाकर उपर्युक्त सभाओं के क्षेत्र में प्रवासित सभी परिवारों से सम्पर्क स्थापित कर कार्य को लक्ष्य तक पहुंचाने में सफल होंगे। इस कार्य में स्थानीय सभाओं एवं कार्यकारिणी सदस्यों के साथ-साथ राज्यप्रभारियों, संयोजकों, परामर्शकों से सम्पूर्ण सहयोग प्राप्त करने हेतु प्रयास किया जाएगा।

उन्होंने सभी का आह्वान करते हुए कहा कि हमें तेरापंथ धर्मसंघ की सर्वोच्च संस्था महासभा को उत्कर्ष के शिखर तक पहुँचाने का एक महान संकल्प लेकर चलना है और इसमें महासभा, सभाओं व समाज के सभी प्रतिनिधियों को मिलकर इस लक्ष्य की सिद्धि हेतु कार्य करने की अपेक्षा है ताकि समाज को संगठित,

शक्तिशाली और एकात्मकता का बोध प्राप्त हो।

अध्यक्ष महोदय ने सदन को सूचित किया कि महासभा द्वारा सभाओं को इसकी रूपरेखा दर्शाते हुए एक परिपत्र शीघ्र ही प्रेषित किया जाएगा। उन्होंने यह भी बताया कि तेरापंथ समाज को प्रेरणा देने तथा अनुदानदाताओं की निष्ठा, समर्पण और अनुदान की जानकारी उनकी भावी पीढ़ी को व्यापक स्तर पर मिल सके इस हेतु तेरापंथ की राजधानी लाडनूं में जैन विश्व भारती के परिसर में किसी प्रमुख स्थान पर ताम्रपत्र आलेख का निर्माण कर उसे उपयुक्त रूप से प्रदर्शित किया जाएगा, जिसमें सभी दानदाताओं के नाम समाविष्ट रहेंगे। साथ ही एक इलेक्ट्रोनिक कियोस्क का भी निर्माण किया जाएगा, जिसके बटन को दबाकर कोई भी इच्छुक व्यक्ति अनुदानदाताओं की सूची देख सकेंगे। यह समाज की भावी पीढ़ी के लिए प्रेरणा का महान स्रोत बनेगा, ऐसा हमारा मानना है।

शताब्दी अक्षय निधि कोष हेतु एक अलग बैंक एकाउंट खोला गया है। इस कोष से होने वाली आय को ही सामाजिक कार्यों में लगाया जाएगा और उसकी मूल निधि को अक्षुण्ण रखा जाएगा।

सदन में उपस्थित सभी सदस्यों ने इस पूरी परियोजना को सफल बनाने हेतु योगभूत बनने का आश्वासन दिया।

बैठक में महाप्रज्ञ स्मारक स्थल की आन्तरिक साज सज्जा एवं रखरखाव तथा भविष्य में वहां संचालित की जाने वाली प्रवृत्तियों पर भी चर्चा की गई।

श्री बिमल कुमार नाहटा, प्रधान न्यासी ने अपने वक्तव्य में उपस्थित सभी सदस्यों का आह्वान करते हुए कहा कि महासभा के अध्यक्ष महोदय ने शताब्दी अक्षय निधि कोष के बारे में जो जानकारी दी है उस संदर्भ में सभी पदाधिकारीगण, न्यासीगण, कार्यकारिणी सदस्यगण, राज्यप्रभारी, संयजोकगण एवं विशेष आमंत्रित सदस्यगण उत्साह से जुड़ें और समाज के ज्यादा से ज्यादा परिवारों को जोडें।

उन्होंने श्रावक समाज से अनुरोध किया कि महासभा या किसी संघीय कार्य के लिए जब श्रावक-श्राविकाओं द्वारा अनुदान की घोषणा की जाती है तो उसे हरेक स्थिति में निभाना चाहिए। उन्होंने कहा कि इस संबंध में आचार्यश्री भी फरमाते हैं कि यदि आपने चन्दा या अनुदान के लिए घोषणा कर दी है तो वह अर्थ अपना नहीं रह जाता है। संस्थाओं द्वारा किए जाने वाले खर्च के संबंध में उन्होंने कहा कि उसमें पूर्ण पारदर्शिता, नैतिकता एवं ईमानदारी बनाए रखें तथा व्यर्थ खर्च से बचें।

इसी क्रम में तेरापंथ भवन निर्माण परियोजना हेतु एक स्थायी समिति के गठन के लिए महासभा के संविधान में संशोधन करने हेतु एक असाधारण सभा के प्रधान कार्यालय में आयोजन की स्वीकृति के प्रस्ताव को अनुमोदित किया गया।

महासभा के आगामी आयोजनों की तिथियों एवं स्थान के विषय में सदन को सूचित किया गया।

महासभा के आगामी वित्तीय वर्ष हेतु बजट का प्रस्तुतीकरण एवं संस्था की वर्तमान आर्थिक स्थिति पर भी सदन में चर्चा की गई।

महासभा के महामंत्री श्री विनोद बैद ने कार्यसमिति की बैठक का कुशलतापूर्वक संचालन करते हुए समाज के समुन्नयन में महासभा की विकासमूलक गतिविधियों की भूमिका का उल्लेख किया।

नई सभा का गठन

महासभा ने आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी एवं महासभा के नई शताब्दी में प्रवेश के उपलक्ष्य में 100 नयी तेरापंथी सभाओं के गठन का लक्ष्य निर्धारित किया है। इस क्रम में तीन नई सभाओं का गठन किया गया, जो निम्नलिखित हैं :

तूफानगंज सभा, पश्चिम बंगाल - साध्वीश्री प्रमिलाकुमारीजी के पावन सान्निध्य में तूफानगंज में श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा का गठन किया गया जिसके अध्यक्ष श्री माणकचंद नाहर, उपाध्यक्षद्वय श्री सुशील कुमार नाहटा एवं श्री माणकचंद नाहटा, मंत्री श्री सम्पतमल नाहटा, सहमंत्री श्री सम्पतमल बोथरा एवं श्री झंवरलाल भंसाली, कोषाध्यक्ष श्री ललित बोथरा एवं श्री राजकरण नाहटा, संगठन मंत्री श्री सुभाष कुमार बोथरा एवं श्री नवरतनमल बैद मनोनीत हुए।

फालाकाटा सभा, पश्चिम बंगाल - साध्वीश्री प्रमिलाकुमारीजी के सान्निध्य में दिनांक 01.03.2014 को फालाकाटा में श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा का गठन किया गया। नवगठित सभा के अध्यक्ष श्री भैरूंदान सेठिया, उपाध्यक्ष श्री पूनमचन्द लोढ़ा एवं श्री ठाकरमल सेठिया, मंत्री श्री कमल कुमार सेठिया, सहमंत्री श्री सुशील बोथरा एवं श्री ललित भादानी, कोषाध्यक्ष श्री अमित पुगलिया, संगठन मंत्री श्री मदन छाजेड़ को मनोनीत किया गया। महासभा के पूर्व सहमंत्री श्री बजरंग कुमार सेठिया ने अध्यक्ष को पद व गोपनीयता की शपथ दिलाई।

इलकल सभा, कर्नाटक - साध्वीश्री काव्यलताजी की प्रेरणा से इलकल में तेरापंथी सभा का गठन किया गया जिसके अध्यक्ष श्री सज्जनराज सुराणा, उपाध्यक्ष श्री गौतम गेलड़ा, मंत्री श्री पवन सुराणा, सहमंत्री श्री यतिन गेलड़ा, कोषाध्यक्ष श्री विकास सुराणा, संगठन मंत्री श्री दिलीप सुराणा बने।

नई सभा के गठन की प्रक्रिया

उक्त तीन सभाओं के निर्माण के अतिरिक्त निम्नलिखित तीन सभाओं के गठन की प्रक्रिया प्रारंभ की गई :

1.रानियाबड़ा बास (राजस्थान) 2. जानकी नगर, पूर्णिया (बिहार) एवं 3. यवतमाल (महाराष्ट्र)

आचार्य महाप्रज्ञ स्मारक स्थल– अध्यात्म के 'शान्ति पीठ' पर चारित्रात्माओं एवं श्रद्धालुओं का आगमन

तेरापंथ धर्मसंघ के दशम आचार्य महात्मा महाप्रज्ञजी की पावन स्मृति को संजोने और सम्पूर्ण मानवता को उनके जीवन की महान उपलब्धियों से अवगत कराने एवं उनके विश्व मैत्री के संदेश को प्रचारित व प्रसारित करने के उद्देश्य से तेरापंथ धर्मसंघ की तपोभूमि सरदारशहर में निर्मित अध्यात्म के **शान्तिप ीठ** पर चारित्रात्माओं एवं श्रद्धालुओं का आगमन नियमित रूप से हो रहा है।

मार्च 2014 के दौरान तेरापंथ धर्मसंघ के अनेक चारित्रात्माओं का आगमन शान्ति पीठ में हुआ, जिनके सान्निध्य में वहाँ श्रद्धा-भक्ति के अनेक कार्यक्रम आयोजित हुए। इस माह जिन चारित्रात्माओं के सिंघाड़ों का शान्ति पीठ में सान्निध्य प्राप्त हुआ उनमें प्रमुख हैं – साध्वीश्री रिजुबालाजी, साध्वीश्री विद्यावतीजी, साध्वीश्री बिमलप्रभाजी, साध्वीश्री सुप्रभाजी, मुनिश्री सुमेरमलजी 'सुदर्शन', मुनिश्री जयकुमारजी, साध्वीश्री तिलकश्रीजी, साध्वीश्री निर्वाणश्रीजी, साध्वीश्री मंजुश्रीजी, साध्वीश्री अमितप्रभाजी, मुनिश्री कमलकुमारजी, साध्वीश्री यशोधराजी, साध्वीश्री जगतप्रभाजी, साध्वीश्री लब्धिप्रभाजी, साध्वीश्री कंचनबालाजी, साध्वीश्री धर्मप्रभाजी, साध्वीश्री शुभप्रभाजी।

इसी क्रम में दिनांक 8 मार्च, 2014 को प्रसिद्ध पंजाबी गायक श्री दलेर मेंहदी वहाँ पधारे और आचार्य महाप्रज्ञ को अपनी भावांजलि अर्पित की। एक दिवसीय प्रवास के दौरान उन्होंने चारित्रात्माओं के दर्शन कर उनसे प्रेरणा पाथेय प्राप्त किया एवं भविष्य में भी यहाँ आने हेतु अपनी भावना व्यक्त की।

महासभा के पदाधिकारियों द्वारा शान्ति पीठ में कार्यों की समीक्षा

27 एवं 28 मार्च, 2014 को अपनी भावांजलि प्रस्तुत करने हेतु महासभा के अध्यक्ष श्री कमल कुमार दुगड़ के नेतृत्व में महासभा के पदाधिकारी, जिनमें प्रधान न्यासी श्री बिमल कुमार नाहटा, न्यासी श्री तुलसी दुगड़, उपाध्यक्ष श्री तरुण सेठिया, महामंत्री श्री विनोद बैद तथा कोषाध्यक्ष श्री सुरेन्द्र कुमार बोरड़ शामिल थे, ने महाप्रज्ञ स्मारक स्थल - शान्ति पीठ परिसर का दौरा किया। उनके साथ निर्माण परियोजना के वास्तुविद मेसर्स कैलिडो के श्री शिवशंकर भी उपस्थित थे।

इस अवसर पर दोनों अतिथि गृहों, एनेक्सी भवन के कक्षों एवं कार्यालय आदि की आंतरिक साज-सज्जा एवं फर्नीचर आदि के नापजोख का आकलन किया गया तथा संबंधित प्रतिष्ठानों को कोटेशन प्रस्तुत करने का निर्देश दिया गया।

श्रीमद् जयाचार्य निर्वाण स्थल पर महासभा टीम द्वारा श्रद्धा प्रणति

दिनांक 27 मार्च 2014 को महासभा अध्यक्ष श्री कमल कुमार दुगड़, प्रधान न्यासी श्री बिमल नाहटा, उपाध्यक्ष श्री तरुण सेठिया, महामंत्री श्री विनोद बैद, न्यासी श्री तुलसी दुगड़ ने जयपुर सभाध्यक्ष श्री राजकुमार बरड़िया, महासभा कार्यसमिति सदस्य श्री प्रदीप डोसी के साथ महामना श्रीमद जयाचार्य की ऐतिहासिक प्रवास एवं निर्वाण स्थली सिंघड़ हाउस, जयपुर का अवलोकनार्थ दौरा कर श्रद्धाप्रणति अर्पित की एवं इस भवन के समाजोपयोगी कार्यों हेतु विकास सम्बन्धी सिंघड़ परिवार के सदस्यों के साथ विचार विमर्श किया।

महासभा के पदाधिकारियों द्वारा संगठन यात्रा

दिनांक 28 मार्च, 2014 को महासभा के अध्यक्ष श्री कमल कुमार दुगड़, प्रधान न्यासी श्री बिमल नाहटा एवं उपाध्यक्ष श्री तरुण सेठिया, महामंत्री श्री विनोद बैद, कोषाध्यक्ष श्री सुरेन्द्र बोरड़ और न्यासी श्री तुलसी दुगड़ ने संगरिया तेरापंथी सभा द्वारा तेरापंथ भवन निर्माण हेतु अधिगृहित भूखंड का अवलोकन किया एवं तेरापंथी सभा, संगरिया को आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह समिति एवं महासभा शताब्दी समारोह के उपलक्ष्य में तेरापंथ भवन निर्माण योजना के अन्तर्गत सहयोग राशि प्रदान करने की स्वीकृति प्रदान की।

शान्ति पीठ में धम्म जागरण का आयोजन

तेरापंथ के दशम अनुशास्ता आचार्य श्री महाप्रज्ञ के पांचवे महाप्रयाण दिवस के पावन अवसर पर अभ्यर्थना की सुर सरिता

श्रद्धानिष्ठ संगायक श्री कमल सेठिया एवं श्रीमती मीनाक्षी भूतोड़िया तथा अन्य गायक-गायिकाओं द्वारा अभ्यर्थना-अभिवंदना का कार्यक्रम शुक्रवार 25 अप्रैल, 2014 को आचार्य महाप्रज्ञ स्मारक स्थल - शान्ति पीठ में रात्रि 7.00 बजे से 10.00 बजे तक आयोजित किया जा रहा है। इस अवसर पर श्री सुमतिचन्द गोठी मुख्य अतिथि एवं श्री तेजकरण सुराणा विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित होकर कार्यक्रम की गरिमा में श्रीवृद्धि करेंगे।

समग्र समाज को सपरिवार उपस्थिति हेतु सादर आमंत्रण!
कृपया समयबद्ध उपस्थित होकर अपनी भावांजलि अर्पित करें।

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा

पदाधिकारीगण

सत्र 2014-16

श्री कमल कुमार दुगड़	अध्यक्ष	श्री पुष्प जैन	उपाध्यक्ष
श्री हीरालाल मालू	निर्वतमान अध्यक्ष	श्री विनोद बैद	महामंत्री
श्री अनूप कुमार बोथरा	उपाध्यक्ष	श्री विनोद कुमार लूणिया	सहमंत्री
श्री किशनलाल डागलिया	उपाध्यक्ष	श्री पंकज राय सेठिया	सहमंत्री
श्री पी ज्ञानचंद जैन	उपाध्यक्ष	श्री सुरेन्द्र कुमार बोरड़	कोषाध्यक्ष
श्री तरुण सेठिया	उपाध्यक्ष		

न्यास मंडल

सत्र 2014 - 2016

श्री बिमल कुमार नाहटा	प्रधान न्यासी	गुवाहाटी
श्री प्रकाशचन्द बैद	न्यासी	कोलकाता
श्री वीडीएस गौतम सेठिया	न्यासी	तिरुवन्नामलै
श्री ज्योति कुमार बेगानी	न्यासी	काठमांडु
श्री जीतमल चोरड़िया	न्यासी	दिल्ली
श्री ओमप्रकाश जालान	न्यासी	कोलकाता
श्री सोहनलाल धाकड़	न्यासी	मुंबई
श्री तुलसी कुमार दुगड़	न्यासी	कोलकाता

पंच मंडल

सत्र 2014 - 2016

श्री भंवरलाल नाहटा	पंच	बैंगलोर
श्री सवाईलाल पोखरणा	पंच	उदयपुर
श्री रतनलाल पारख	पंच	कोलकाता

कार्यकारिणी सदस्य

सत्र 2014 - 2016

श्री अभय दुधोड़िया	मुम्बई	श्री अरविन्द कुमार एम. जैन (धाकड़)	मुम्बई
श्री अमरचन्द दुगड़	कोलकाता	श्री अरविंद पटावरी	दिल्ली
श्री अमरचन्द सिपानी	कोलकाता	श्री अर्जुन चौधरी	मुम्बई
श्री अनिल सिंघवी	नवी मुम्बई	श्री अरुण संचेती	कोलकाता

श्री अशोक कुमार डोसी	उदयपुर	श्री मूलचन्द बैद	सिलचर
श्री अशोक कुमार तातेड़	मुम्बई	श्री नगराज बरमेचा	कोलकाता
श्री अशोक सेठिया	गुवाहाटी	श्री नरेन्द्र बरमेचा	दिल्ली
श्री बाबूलाल बोथरा	कोलकाता	श्री नरेन्द्र कुमार बरड़िया	कोलकाता
श्री बाबूलाल दुगड़	हनुमानगढ़ टाउन	श्री नवरत्न पारख	सिलीगुड़ी
श्री बाबूलाल जी. सेखानी	अहमदाबाद	श्री नेमचन्द बैद	गुलाबबाग
श्री बहादुर सेठिया	बैंगलोर	श्री ओमप्रकाश सिंघी	गंगटोक
श्री भीखमचन्द पुगलिया	कोलकाता	श्री पदमचन्द भूतोड़िया	कोलकाता
श्री भूपेन्द्र सामसुखा	कोलकाता	श्री पदम जैन	सिरसा
श्री बिमल राठौड़	सूरत	श्री पियुष दक	सिकन्दराबाद
श्री बिनोद कुमार चोरड़िया	कोलकाता	श्री पूनमचन्द बरबेटा	रतलाम
श्री बिनोद संचेती	कोलकाता	श्री प्रदीप डोसी	जयपुर
श्री चैनरूप दुगड़	मुम्बई	श्री प्रकाश बैद	कोलकाता
श्री दीपक पुगलिया	मुम्बई	श्री प्रकाश चन्द मालू	कोलकाता
श्री देवराज आच्छा	चेन्नई	श्री प्रेमचन्द सिंगला	चण्डीगढ़
श्री देवराज खींवसरा	दिल्ली	श्री रघुवीर जैन	गुड़गांव
श्री धनराज सुराणा	कानपुर	श्री राहुल जैन (जिन्दल)	संगरूर
श्री धनपत सिंह दुगड़	कोलकाता	श्री राजेश कुमार भूतोड़िया	कोलकाता
श्री धर्मीचन्द धोका	होसकोटे	श्री राजेश सुराणा	सूरत
श्री दिलीप सिंघवी	जोधपुर	श्रीमती राजकुमारी मणोत	मुम्बई
श्री दिनेश गोलछा	विराटनगर	श्री रणजीत सिंह खटेड़	लाडनूं
श्री जी. सुकनराज परमार	चेन्नई	श्री रिधकरण लुणिया	नई दिल्ली
श्री घीसा राम जैन (खदारिया)	मंडी आदमपुर	श्री रोशनलाल सांखला	केलवा
श्री हंसराज बेताला	भागलपुर	श्री संजय खटेड़	नई दिल्ली
श्री हंसराज डागा	गंगाशहर	श्री संजय मालू	नई दिल्ली
श्री हेमन्त कुमार दुगड़	कोलकाता	श्रीमती सायर बोथरा	दिल्ली
श्री हिमांशु बैद	दिल्ली	श्री शांतिलाल भंसाली	जसोल
श्री हुलास चन्द दुगड़	हावड़ा	श्री शान्तीलाल खटेड़	गुवाहाटी
श्री जीवराज सेठिया	कोलकाता	श्री शांतिलाल सिंघवी	उदयपुर
श्री कमल नवलखा	लुधियाना	श्री सुभाष चन्द भूरा	भुवनेश्वर
श्री खेमचन्द रामपुरिया	कोलकाता	श्री सुनील जैन	नई दिल्ली
श्री कीर्ति भाई सिंघवी	भुज-कच्छ	श्री सुनील कच्छारा	मुम्बई
श्री ललित सिंघी	कोलकाता	श्री सुरेन्द्र बोरड़ (पटावरी)	बेल्जियम
श्री लक्ष्मीपत दुधोड़िया	बैंगलोर	श्री सुरेन्द्र छाजेड़	मुम्बई
श्री महावीर रांका	गंगाशहर	श्री सुरेन्द्र घोषल	नई दिल्ली
श्री माणक नाहटा	कोलकाता	श्री सुरेन्द्र कोठारी	मुम्बई
श्री मांगीलाल बोथरा	जयगांव	श्री सुरेन्द्र सुराणा	कोलकाता
श्री मनोज दुगड़	सिकन्दराबाद	श्री सुरेश कुमार दुगड़	मकराना
श्री मनोज कुमार लुणिया	शिलौंग	श्री तेजकरण बोथरा	कोलकाता
श्री मनोज कुमार सिंघी	हावड़ा	श्री विमल के. सेठिया	चेन्नई

विभागीय संयोजकगण
सत्र 2014 - 2016

पद	नाम	स्थान
राष्ट्रीय संयोजक - ज्ञानशाला प्रकोष्ठ	श्री सोहनराज चौपड़ा	अहमदाबाद
राष्ट्रीय संयोजक - उपासक श्रेणी	श्री डालिमचन्द नवलखा	अहमदाबाद
राष्ट्रीय सह-संयोजक - उपासक श्रेणी	श्री महावीर प्रताप दुगड़	कोलकाता
शिविर व्यवस्था प्रभारी - उपासक श्रेणी	श्री विनोद कुमार बांठिया	सूरत
राष्ट्रीय संयोजक - मेधावी छात्र प्रोत्साहन परियोजना	श्री के. सी. जैन	पटना
राष्ट्रीय नियोजक - मेधावी छात्र प्रोत्साहन परियोजना	श्री बजरंगलाल बोथरा	नोएडा
राष्ट्रीय संयोजक - सहभागिता योजना	श्री किशनलाल डागलिया	मुम्बई
राष्ट्रीय संयोजक - संगठन यात्रा	श्री पन्नालाल पुगलिया	जयपुर
संयोजक - भवन व्यवस्था	श्री पानमल मालू	कोलकाता
सह संयोजक - भवन व्यवस्था	श्री जितेन्द्र सेठिया	कोलकाता
सह संयोजक - भवन व्यवस्था	श्री प्रदीप पुगलिया	कोलकाता
संयोजक - जैन भारती	श्री नोरतमल बोथरा	कोलकाता
संयोजक - साहित्य	श्री हेमराज सामसुखा	बैंगलोर
सह संयोजक - साहित्य	श्री जंवरीलाल नाहटा	कोलकाता
संयोजक - कासीद व्यवस्था	श्री सुरेन्द्र बोरड़	कोलकाता
सह-संयोजक - कासीद व्यवस्था	श्री जतनलाल सेठिया	सरदारशहर
संयोजक - भिक्षु ग्रन्थागार	डॉ. मंजु नाहटा	कोलकाता
संयोजक - सेवा विभाग	श्री बाबूलाल सुराणा	कोलकाता
सह-संयोजक - सेवा विभाग	श्री इन्द्राजमल नाहटा	कोलकाता
सह-संयोजक - सेवा विभाग	श्री अभय कुमार दुगड़	कोलकाता
सह-संयोजक - सेवा विभाग	श्री महेन्द्र बैद	कोलकाता
सह-संयोजक - सेवा विभाग	श्री गुलाब पींचा	कोलकाता
सह-संयोजक - सेवा विभाग	श्री राजप्रकाश बांठिया	अररिया
संयोजक - जनगणना विभाग	श्री जतनमल गेलड़ा	कोलकाता
सम्पादक - अभ्युदय	श्री सुरेन्द्र कुमार बोरड़	कोलकाता
संयोजक - समस्या समाधान प्रकोष्ठ	श्री विनोद बैद	कोलकाता
संयोजक - प्रचार-प्रसार	श्री प्रकाशचन्द मालू	कोलकाता
सह संयोजक - प्रचार-प्रसार	श्री प्रताप दुगड़	कोलकाता
संयोजकद्वय - वेबसाइट	श्री पंकज राय सेठिया	कोलकाता
	श्रीमती कमला छाजेड़	कोलकाता

संयोजक - केन्द्रीय यात्रा व्यवस्था	श्री विनोद बैद	कोलकाता
संयोजक - आयोजन व्यवस्था	श्री विनोद बैद	कोलकाता
संयोजक - तेरापंथ भवन निर्माण योजना	श्री कमल कुमार दुगड़	कोलकाता
	श्री बिमल कुमार नाहटा	गुवाहाटी
	श्री विनोद बैद	कोलकाता
संयोजक - शताब्दी अक्षय निधि कोष	श्री कमल कुमार दुगड़	कोलकाता
	श्री बिमल कुमार नाहटा	गुवाहाटी
संयोजक - सधार्मिक संपर्क अभियान	श्री तरुण सेठिया	कोलकाता
संयोजक - सभा प्रतिनिधि सम्मेलन	श्री विनोद बैद	कोलकाता
संयोजक - दाम्पत्य जीवन सामंजस्य प्रकोष्ठ	श्री भंवरलाल बैद	कोलकाता
महाप्रज्ञ स्मारक स्थल निर्माण एवं व्यवस्था प्रभारीगण	श्री कमल कुमार दुगड़	कोलकाता
	श्री बिमल कुमार नाहटा	गुवाहाटी
	श्री तुलसी कुमार दुगड़	कोलकाता
	श्री सुरेन्द्र कुमार बोरड़	कोलकाता
प्रभारी - अभ्युदय भवन, लाडनूं	श्री धनपत दुगड़	कोलकाता
कार्यालय प्रभारी - महासभा कोलकाता कार्यालय	श्री विमल बैद	कोलकाता
कार्यालय प्रभारी-आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह समिति	श्री तरुण सेठिया	कोलकाता
संयोजक - नव सभा गठन	श्री अनूप कुमार बोथरा	फारबिसगंज

राज्य प्रभारी
सत्र 2014 - 2016

	नाम	स्थान
आन्ध्र प्रदेश	श्री राजकुमार सुराना	हैदराबाद
असम	श्री दिलीप दुगड़	तेजपुर
बिहार	श्री राजकरण दफ्तरी	किशनगंज
छत्तीसगढ़	श्री सुन्दरलाल दुगड़	मनेन्द्रगढ़
दिल्ली	श्री गोविन्द बाफना	दिल्ली
गुजरात	श्री विनोद बांठिया	सूरत
हरियाणा	श्री सुरेन्द्र जैन 'एडवोकेट'	भिवानी
झारखण्ड	श्री मदन मोहन चोरड़िया	चास-बोकारो
कर्नाटक	श्री दीपचन्द नाहर	बैंगलोर
मध्यप्रदेश	श्री भूरामल श्यामसुखा	इंदौर

महाराष्ट्र	श्री रमेश सुतरिया	मुम्बई
नेपाल	श्री विनोद सेठिया	काठमांडू
उड़ीसा पूर्व	श्री मोहनलाल चौरड़िया	कटक
उड़ीसा पश्चिम	श्री मनोज जैन	बालंगीर
पंजाब	श्री सुरेन्द्र मित्तल	मंडी गोविन्दगढ़
राजस्थान - अजमेर संभाग	श्री भागचन्द बरड़िया	लाडनूं
राजस्थान - बीकानेर संभाग	श्री लूनकरण छाजेड़	गंगाशहर
राजस्थान - जयपुर संभाग	श्री दौलत डागा	जयपुर
राजस्थान - जोधपुर संभाग	श्री गौतम सालेचा	जसोल
राजस्थान - उदयपुर संभाग	श्री महेन्द्र कोठारी	केलवा
तमिलनाडु	श्री जे. गौतमचन्द सेठिया	चेन्नई
उत्तरप्रदेश	श्री टीकमचन्द सेठिया	कानपुर
पश्चिम बंगाल	श्री नरेन्द्र मनोत	कोलकाता
अन्तरराष्ट्रीय संगठन	श्री राजेन्द्र बैंगानी	दुबई

परामर्शकगण
सत्र 2014 - 2016

नाम	स्थान	नाम	स्थान
श्री अमृतलाल भंसाली	बैंगलोर	श्री कन्हैयालाल पटावरी	कोलकाता
श्री बजरंग बोथरा	दिल्ली	श्री कन्हैयालाल गिड़िया	बैंगलोर
श्री बजरंग जैन	बैंगलोर	श्री ख्यालीलाल तातेड़	मुम्बई
श्री भंवरलाल बैद	कोलकाता	श्री लक्ष्मणसिंह कर्णावट	उदयपुर
श्री भंवरलाल सिंघी	कोलकाता	श्री लोकमान्य गोलछा	काठमाण्डू
श्री भोजराज बैद	कोलकाता	श्री महेन्द्र नाहटा	दिल्ली
श्री चैनरूप चिण्डालिया	कोलकाता	श्री मांगीलाल छाजेड़	बैंगलोर
श्रीमती चम्पा देवी कोठारी	कोलकाता	श्री मूलचन्द डागा	कोलकाता
श्री चम्पक भाई मेहता	सूरत	श्री मूलचन्द नाहर	बैंगलोर
श्री छत्तरसिंह बैद	कोलकाता	श्री नगराज छाजेड़	अहमदाबाद
श्री दानमल पोरवाल	भिलाई	श्री नरपतसिंह चोरड़िया	बैंगलोर
श्री दौलत सुराणा	कोलकाता	श्री नवीन जिंदल	दिल्ली
श्री जसकरण चौपड़ा	सूरत	श्री नवरतन मल बच्छावत	बैंगलोर
श्री कैलाशचन्द गोयल	कोलकाता	श्री निर्मल कोटेचा	गुवाहाटी
श्री कन्हैयालाल जैन (पटावरी)	दिल्ली	श्री पदमचन्द पटावरी	राजसमंद

नाम	स्थान	नाम	स्थान
श्री पारस बांठिया	कोलकाता	श्री संजय पुगलिया	मुम्बई
श्री प्रमोद नाहटा	कोलकाता	श्रीमती सावित्री जिंदल	हिसार
श्री राजेन्द्र डाबड़ीवाल	कोलकाता	श्री शान्तिलाल बरमेचा	मुम्बई
श्री राजेन्द्र बच्छावत	कोलकाता	श्री सुमित डाबड़ीवाल	कोलकाता
श्री राजेन्द्र बरड़िया	जयपुर	श्री सुरेन्द्र कुमार बोथरा	बीकानेर
श्री राकेश कठोतिया	मुम्बई	श्री सुरेन्द्र चोरड़िया	कोलकाता
श्री रमेश कुमार हमेरलाल धाकड़	मुम्बई	श्री सुरेन्द्र कुमार दुगड़	कोलकाता
श्री रणजीतसिंह कोठारी	कोलकाता	श्री स्वरूपचन्द बरड़िया	दिल्ली
श्री रतनलाल रामपुरिया	कोलकाता	श्रीमती तारा देवी सुराणा	कोलकाता
श्री सम्पतमल बच्छावत	जयपुर	श्री टोडरमल लालानी	फरीदाबाद
श्री सम्पतलाल मादरेचा	मुम्बई	श्री विवेक कठोतिया	कोलकाता
श्री संजय घोड़ावत	जयसिंहपुर		

अमृत पुरुष को राजकीय अतिथि का सम्मान

संपूर्ण तेरापंथ धर्मसंघ और समाज के लिए परम आह्लाद और गौरव का विषय है कि हमारे धर्मसंघ के एकादशवें अधिशास्ता परम पावन शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमण को हरियाणा और पंजाब सरकार ने अपने-अपने राज्य में यात्रा के दौरान उन्हें राजकीय अतिथि का सम्मान प्रदान किया है। आचार्यश्री महाश्रमण अपनी यात्राओं के दौरान सत्य, अहिंसा, संयम और शान्ति की अमूल्य निधि से समृद्ध कर मानवता का महान कल्याण कर रहे हैं। जनहित के महान उद्देश्य से यात्रायित आचार्यश्री 31 मार्च, 2014 को हरियाणा में प्रवेश करेंगे, फिर कुछ ही दिनों में पंजाब में प्रवेश करेंगे। पंजाब की स्वल्प दिनों की यात्रा के पश्चात पुनः हरियाणा में प्रवेश करेंगे। पूज्यवर का जिन-जिन क्षेत्रों में पदार्पण होना निर्धारित है, वहां के लोग उत्साह, उल्लास और उमंग के साथ तैयारियों में जुटे हुए हैं। हरियाणा और पंजाब सरकार भी जनता की पवित्र भावनाओं से संगति रखते हुए परमपूज्य आचार्यवर को अपने-अपने राज्य में सम्मान एवं श्रद्धा निवेदित कर धन्यता का बोध कर रही है और राजकीय अतिथि के रूप में सम्मानित कर स्वयं को गौरवान्वित महसूस कर रही है। दोनों सरकारों ने 19 मार्च, 2014 को इस संदर्भ में अधिसूचनाएं जारी कर अपने-अपने प्रशासन को आवश्यक निर्देश दिए हैं। हरियाणा और पंजाब के श्रद्धालुओं के साथ हमारा हृदय भी आज अतिशय उल्लास और आह्लाद से अभिभूत है।

दीक्षा हेतु प्रार्थना

7 मार्च को प्रातःकालीन कार्यक्रम में मुमुक्षु जयेश बरलोटा (मुम्बई) ने आचार्यवर से दीक्षा आदेश प्रदान करने की प्रार्थना की। जयेश के पिता श्री अशोक बरलोटा ने अपने इकलौते पुत्र को पूज्यचरणों में अर्पित करने की भावना व्यक्त की। परम श्रद्धेय आचार्यवर ने अनुग्रहवृष्टि करते हुए आषाढ़ कृष्णा षष्ठी, तदनुसार 18 जून, 2014 को दिल्ली में दीक्षा समारोह करने तथा उस समारोह में मुमुक्षु जयेश को मुनि दीक्षा प्रदान करने की घोषणा की।

18 मार्च के कार्यक्रम में ग्यारह वर्षीय मुमुक्षु नमन डागा (गंगाशहर-दिल्ली) ने आचार्यवर से शीघ्रातिशीघ्र संयमरत्न प्रदान करने की प्रार्थना की। नमन के पिता श्री जुगराज डागा और माता श्रीमती जया डागा ने अपने पुत्र को श्रीचरणों में अर्पित करने की भावना अभिव्यक्त की। आचार्यवर ने मुमुक्षु नमन को 18 जून, 2014 को समायोज्य दीक्षा समारोह में मुनि दीक्षा प्रदान करने की घोषणा की।

चुनाव शुद्धिकरण अभियान में महासभा की पहल

अणुव्रत संकल्प पत्र भरते हुए असम के राज्यपाल श्री जे. वी. पटनायक व साथ में समणी निर्देशिका ज्यातिप्रज्ञाजी

सशक्त भारत के निर्माण हेतु चुनाव शुद्धि के माध्यम से मानवीय एकता की भावना विकसित करने तथा देश एवं समाज में सभी स्तरों पर नैतिकता की प्रतिष्ठा और मानव मूल्यों का विकास करने के क्षेत्र में तेरापंथ धर्मसंघ का अवदान अतुलनीय रहा है। इस धर्मसंघ के एकादशवें अधिशास्ता शान्तिदूत आचार्य श्री महाश्रमण पूरे देश की पदयात्रा करते हुए वर्ण, जाति, भाषा, सम्प्रदाय से मुक्त भारत की संरचना का संदेश निरंतर प्रसारित कर रहे हैं।

भारत में लोकतंत्र की परंपरा विश्व में सबसे प्राचीन है और वह पूरे विश्व की संसदीय व्यवस्था का ध्वजवाहक रहा है। इसकी लोकसभा संसार की सबसे बड़ी लोकसभा के रूप में प्रतिष्ठित है। जन नेताओं में उसकी आत्मा की पवित्रता, नैतिकता और प्रजातंत्रात्मक पद्धति के प्रति निष्ठा अद्वितीय रही है। लोकतंत्र में चुनाव का महत्व वर्णनातीत है। यह एक ऐसी आधारशिला है जो संपूर्ण राष्ट्र रूपी भवन को स्थायित्व एवं भव्यता प्रदान करती है और लोकशक्ति को सुदृढ़ता प्रदान करती है।

इस समय देश 16वीं लोकसभा के निर्माण के दौर से गुजर रहा है। इस अवसर पर पूज्य प्रवर ने चुनाव में उम्मीदवार बने नेतृत्व वर्ग के नाम एक संदेश जारी कर चुनाव में नैतिकता, ईमानदारी, सत्यनिष्ठा और चारित्रिक उदात्तता के पालन का आग्रह किया है। आपश्री ने तेरापंथ धर्मसंघ के युगप्रधान आचार्य और अणुव्रत आन्दोलन के प्रवर्तक राष्ट्रसंत तुलसी द्वारा देश एवं समाज के चारित्रिक उन्नयन हेतु आरंभ किए गए अणुव्रत आन्दोलन की ओर उम्मीदवारों का ध्यान आकर्षित किया है, जिसे देश के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद से लेकर तत्कालीन सभी राजनयिकों का भरपूर समर्थन मिला था। उसमें लोकतंत्र में चुनाव के प्रत्याशियों और मतदाताओं के लिए कुछ महत्वपूर्ण आचार-संहिताओं का भी उल्लेख किया गया था। यदि इस चुनाव के अवसर पर उन आचार-संहिताओं का पालन किया जाए तो हमारे देश की बुनियाद और भी सुदृढ़ और भविष्य और भी उज्ज्वल होगा।

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा ने अध्यक्ष श्री कमल कुमार दुगड़ की प्रेरणा से पूज्यप्रवर की दृष्टि की आराधना करते हुए देश निर्माण के इस महान कार्य में सहयोगी बनने की दिशा में अपनी संकल्पबद्धता प्रकट की और अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमणजी द्वारा जारी संदेश को आगामी लोकसभा चुनाव में प्रत्याशी बने सभी व्यक्तियों तक पहुँचाया और आचार-संहिता के पालन हेतु उनसे स्वीकृति प्राप्त करने के लिए एक संकल्प परिपत्र सभी के पास भेजा ताकि वे उसे भरकर महासभा को भेजें, जो भारत के महान लोकतंत्र की पवित्रता के प्रति उनकी निष्ठा का परिचायक होगा तथा भारतीय लोकसभा को और अधिक विकसित, अनुकरणीय तथा उदात्तता प्रदान करने में महनीय भूमिका सुनिश्चित करेगा।

महासभा को विश्वास है कि भारत के सर्वांगीण विकास में एक सजग प्रहरी तथा जागृत जननेता की भूमिका निभाने वाले सभी लोग इस चुनाव शुद्धिकरण के कार्य में पूर्ण सहयोग करेंगे और तेरापंथ धर्मसंघ द्वारा प्रवर्तित इस महनीय राष्ट्रसेवा के यज्ञ में अपनी पुनीत आहुति देंगे, जिससे इस गौरवशाली भारत का भविष्य और भी समृद्ध, समुन्नत एवं सुनहरा होगा।

हमें यह सूचित करते हुए सात्विक प्रसन्नता हो रही है कि देश के कई महामहिम राज्यपालों एवं नेताओं ने महासभा के इस अभियान में सहयोगी की भूमिका निभाई है और संकल्प-पत्रों पर हस्ताक्षर किए हैं।

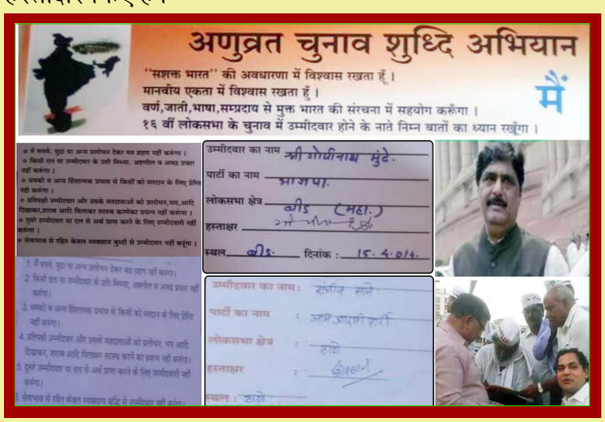

सभा संवाद

दक्षिण कलकत्ता श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, कोलकाता

आचार्य श्री महाश्रमणजी के आदेशानुसार साध्वीश्री अणिमाश्रीजी ने राजगढ़ निवासी एवं कोलकाता प्रवासी स्व. धनराजजी पुगलिया की धर्मपत्नी श्राविका श्रीमती हेमलता देवी पुगलिया को दिनांक 9 मार्च, 2014 को संथारे में जैन भागवती दीक्षा प्रदान कर कोलकाता तेरापंथ के इतिहास में एक स्वर्णिम पृष्ठ का आलेखन किया है। साध्वीश्री अणिमाश्रीजी एवं साध्वीश्री मंगलप्रज्ञाजी के सान्निध्य में साउथ कोलकाता के तेरापंथ सभा भवन में हजारों लोगों की विशाल उपस्थिति में दीक्षा समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें श्रीमती हेमलताजी पुगलिया को भागवती दीक्षा प्रदान की गई। गुरुदेव के निर्देशानुसार नवदीक्षित साध्वी का नाम साध्वी हिम्मतयशा रखा गया। दीक्षा के पश्चात साध्वी हिम्मतयशाजी को पुनः तिविहार संथारे का प्रत्याख्यान करवाया गया। संघ प्रभावना के इस भव्य कार्यक्रम में महासभा के अध्यक्ष श्री कमल कुमार दुगड़ मुख्य अतिथि तथा सांसद श्री सुब्रत बक्शी विशिष्ट अतिथि थे। इनके अतिरिक्त जैन विश्वभारती संस्थान के चांसलर श्री बसंतराज भंडारी आदि अनेक केन्द्रीय, स्थानीय सभा संस्थाओं के गण्यमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। साध्वी मंगलप्रज्ञाजी ने अपने मंगल उद्‌बोधन में कहा कि संथारे एवं दीक्षा दोनों ही उपक्रम कोई प्रबल पुरुषार्थी व्यक्ति ही कर सकता है और श्रीमती हेमलताजी ने ये दोनों ही कार्य एक साथ करके अद्‌भुत साहस का परिचय दिया है। आचार्यश्री तुलसी जन्म-शताब्दी के ऐतिहासिक अवसर पर सौ मुनि दीक्षाओं के संकल्प में एक पुष्प कोलकाता महानगर से श्रीचरणों में समर्पित हो रहा है। महासभा अध्यक्ष श्री कमल कुमार दुगड़ ने कहा कि श्रावक के तीन मनोरथ प्रभु ने बताए हैं। बहन के आज तीनों मनोरथ साकार हो रहे हैं। कोलकाता महानगर भी धन्य-धन्य हो गया है। पूज्य गुरुदेव की कृपा से साध्वीश्री ने नया इतिहास रचा है, इसके लिए हम नतमस्तक हैं।

जैन विश्वभारती संस्थान के चांसलर श्री बसंतराज भंडारी, सांसद श्री सुब्रत बक्शी, साउथ कोलकाता सभाध्यक्ष श्री भंवरलाल बैद, कोलकाता सभाध्यक्ष श्री अमरचन्द दुगड़, जय तुलसी फाउन्डेशन के प्रबन्ध न्यासी श्री सुरेन्द्र दुगड़, दक्षिण हावड़ा सभाध्यक्ष श्री मालचन्द भंसाली, उत्तर हावड़ा सभा के मंत्री श्री राकेश संचेती, पूर्वांचल सभा के मंत्री श्री विक्रम दुधोड़िया, बहन के सुपुत्र श्री नरेन्द्र पुगलिया आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन श्री भंवरलाल सिंघी ने किया। आभार ज्ञापन सभा के मंत्री श्री विजय सिंह चोरड़िया ने किया।

ज्ञातव्य है कि साध्वीश्री हिम्मतयशाजी का तेरह दिनों के संथारे के बाद साउथ कलकत्ता तेरापंथ भवन में 17 मार्च, 2014 को रात्रि 10.15 बजे देवलोकगमन हो गया। साध्वीजी के संथारे में हजारों भाई-बहनों ने साउथ कलकत्ता तेरापंथ भवन में उनके दर्शन किए। साध्वीजी की पार्थिव देह को साध्वीश्री अणिमाश्री ने श्रावकों को संभलाया। उस अवसर पर महासभा के अध्यक्ष श्री कमल कुमार दुगड़, साउथ कलकत्ता सभा के अध्यक्ष श्री भंवरलाल बैद, प्रधान न्यासी श्री तुलसी कुमार दुगड़, मंत्री श्री विजय सिंह चोरड़िया तथा साध्वीजी के पारिवारिक जन एवं अन्य अनेक गण्यमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

साध्वी हिम्मतयशाजी की अंतिम शोभा यात्रा 18.3.2014 को प्रातः लगभग 8.30 बजे साउथ कोलकाता से महासभा के लिए प्रारंभ हुई। इस अवसर पर साध्वीश्री अणिमाश्री जी द्वारा रचित गीतिका - 'पायो संयम थे सुखकार, साध्वी हिम्मतयशाजी री सब बोलो जय-जयकार' ने सभी को आत्मविभोर कर दिया।

दिनांक 19 मार्च, 2014 को साध्वी हिम्मतयशाजी की स्मृति सभा साध्वीश्री अणिमाश्रीजी एवं साध्वीश्री मंगलप्रज्ञाजी के सान्निध्य में साउथ कलकत्ता तेरापंथ भवन में आयोजित की गई। स्मृति सभा को संबोधित करते हुए साध्वीश्री अणिमाश्री ने साध्वी हिम्मतयशाजी को पुण्यशालिनी साध्वी के रूप में आख्यायित

किया और साध्वी मंगलप्रज्ञा जी ने उनकी मृत्यु को पंडित मरण बताते हुए उनके भावी आध्यात्मिक विकास की मंगल कामना की।

कार्यक्रम में महासभा के अध्यक्ष श्री कमल कुमार दुगड़, विकास परिषद के सदस्य श्री बनेचन्द मालू, जय तुलसी फाउंडेशन के प्रबंध न्यासी श्री सुरेन्द्र दुगड़, महासभा के महामंत्री श्री विनोद बैद, साउथ कलकत्ता सभा के अध्यक्ष श्री भंवरलाल बैद, कोलकाता सभा के अध्यक्ष श्री अमरचन्द दुगड़, साध्वी हिम्मतयशा जी के संसारपक्षीय संबंधी, मित्र परिषद के अध्यक्ष श्री प्रमोद नाहटा आदि ने अपने भावों की प्रस्तुति करते हुए दिवंगत साध्वीश्री के प्रति श्रद्धांजलि प्रकट की। कार्यक्रम का संचालन उपासक श्री महाबीर दुगड़ ने किया। प्रशासन व्यवस्था में श्री तुलसी दुगड़ का सहयोग सराहनीय रहा।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, दिल्ली

मुनिश्री सुधाकरजी के सान्निध्य में श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, दिल्ली द्वारा दिनांक 7 मार्च, 2014 को केरल की राज्यपाल श्रीमती शीला दीक्षित के निवास स्थल पर आचार्य श्री तुलसी जन्म शताब्दी समारोह के अंतर्गत अणुव्रत संगोष्ठी का आयोजन किया गया। मुनिश्री ने आचार्य तुलसी के अवदानों का उल्लेख किया और अणुव्रत के 'संयम ही जीवन है' के मुख्य घोष को व्याख्यायित करते हुए कहा कि आचार्य श्री महाश्रमण जी के कुशल नेतृत्व में अणुव्रत के पालन की दिशा में महनीय कार्य हो रहा है।

इस अवसर पर अपना उद्‌गार व्यक्त करती हुई महामहिम राज्यपाल ने कहा कि आचार्य श्री महाश्रमण मानवता के मसीहा हैं औरउ नकेस् ंदेशस् ेद ेशक ेन् ाईई दशाा मलेगी।उ न्होंनेइ सब ाात पर बल दिया कि जिस समाज और राष्ट्र में नैतिकता, अहिंसा और भाईचारे की भावना होती है वह राष्ट्र महान होता है। उन्होंने अणुव्रत आन्दोलन को मानव धर्म का प्रतीक बताया और कहा कि देश का हर नागरिक यदि अणुव्रत के सिद्धान्तों का पालन करे तो देश की अनेक सारी समस्याएँ स्वतः समाप्त हो जाएँगी। राज्यपाल महोदयान ेय ाहअ ाशा० यक्तक ीि कत ुलसीज ान्मश ाताब्दीव ार्षके दौरान आयोजित होने वाले कार्यक्रमों से अहिंसा, नैतिकता एवं राष्ट्रीय एकता का आधार मजबूत होगा।

आचार्य श्री महाश्रमण प्रवास व्यवस्था के महामंत्री श्री शान्ति जैन, अणुव्रत न्यास के प्रबंध न्यासी श्री संपत नाहटा, तेरापंथ सभा के कार्यकारी अध्यक्ष श्री गोविन्द बाफना सहित समाज के विशिष्ट जनों ने राज्यपाल महोदया को आचार्य श्री महाश्रमण के जीवन पर आधारित 'जय जय ज्योति चरण' ग्रंथ भेंट किया।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, सेलम

साध्वीश्री डॉ. पीयूषप्रभाजी के सान्निध्य में बलैपट्टी में दिनांक 16 मार्च, 2014 को होली चातुर्मास का कार्यक्रम आयोजित हुआ। होली चातुर्मास व रंगों के महत्व को रेखांकित करते हुए साध्वीश्री जी ने कहा कि जैन दर्शन में छह लेश्याओं का उल्लेख है। प्रशस्त लेश्याओं के प्रभाव से विचार सकारात्मक बनते हैं। व्यक्ति अपने भीतर की बुराइयों को दूर करे, कृतकर्मों की आलोचना करे तथा चातुर्मासिक प्रतिक्रमण करके अपनी आत्मा को कुछ हल्का करने का प्रयास करे तो इन त्यौहारों को मनाने के पीछे निहित तात्पर्य की सिद्धि होती है। साध्वीश्री भावनाश्री ने नमस्कार महामंत्र के रंग व केन्द्र की जानकारी देते हुए ध्यान का प्रयोग कराया। साध्वी दीप्तियशाजी ने कार्यक्रम का संयोजन करते हुए कहा कि जिस प्रकार हर रंग का अपना महत्व होता है वैसे ही परिवार, समाज में हर सदस्य का महत्व होता है। यदि सभी मिलजुल कर कार्य करें तो इन्द्रधनुष जैसा सुखद परिणाम आ सकता है। सेलम सभाध्यक्ष श्री नरपतजी डूंगरवाल ने सेलम एवं त्रिची से समागत श्रावक-श्राविकाओं का स्वागत करते हुए सभी को होली की शुभकामनाएं दीं। सेलम सभा के पूर्वाध्यक्ष श्री केवलचन्द बोहरा, श्री सरदारमल नाहर आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किए व होली की शुभकामनाएं दीं।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, उदयपुर

तेरापंथी सभा, उदयपुर के तत्वावधान में निःशुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष में आयोजित 9 वां निःशुल्क चिकित्सा शिविर जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा एवं चितरंजन मोबाइल यूनिट के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित हुआ। शिविर में 104 रोगियों के ब्लड शुगर, इ. सी. जी., ब्लड प्रेशर, थायरायड आदि की जांच कर आवश्यक परामर्श दिए गए। शिविर में मोबाइल यूनिट प्रभारी डॉ. राजेन्द्र सामर एवं अन्य चिकित्सकों ने अपनी सेवाएं प्रदान कीं।

आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष के दौरान आयोजित होने वाले विभिन्न कार्यक्रमों के अंतर्गत श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, उदयपुर में आध्यात्मिक कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें बड़ी संख्या में श्रावक-श्राविकाओं ने भाग लिया। मुख्य वक्ता के रूप में वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. देव कोठारी ने कार्यशाला के प्रतिभागियों को संबोधित किया। स्वागत भाषण सभाध्यक्ष श्री राजकुमार फत्तावत ने दिया। संचालन सोनल सिंघवी ने किया

और आभार ज्ञापन सभा के मंत्री श्री अर्जुन खोखावत ने किया।

23 फरवरी, 2014 को आचार्य तुलसी वरिष्ठ नागरिक संस्थान द्वारा समाधिमरण के स्वरूप पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें आध्यात्मिक एवं राष्ट्रभक्ति से ओतप्रोत स्पर्धाओं का आयोजन किया गया। मुख्य वक्ता के रूप में श्री सुरेश सिसोदिया ने अपना वक्तव्य रखा। स्वागत भाषण देते हुए सभाध्यक्ष श्री राजकुमार फत्तावत ने कहा कि कार्यशाला का उद्देश्य समाज के वरिष्ठजनों को आपस में मिलाना भी है। इस अवसर पर वरिष्ठ नागरिकों को उपरणा ओढ़ाकर तथा माल्यार्पण कर सम्मानित किया गया एवं प्रतियोगिता के विजेताओं को पारितोषिक प्रदान कर पुरस्कृत किया गया। संचालन श्री पारसमल कोठारी ने किया और आभार श्री शान्तिलाल सिंघवी ने जताया।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, झकनावद

तेरापंथी सभा, झकनावद एवं तेरापंथ महिला मंडल द्वारा संयुक्त रूप से साध्वीश्री राकेशकुमारी जी के सान्निध्य तथा साध्वीश्री मलयविभाजी, साध्वीश्री विपुलयशा जी के निर्देशन में चित्त समाधि कार्यक्रम का आयोजन दो सत्रों में किया गया। प्रेरणा प्रदान करते हुए साध्वीश्री जी ने कहा कि हमें आपस में ठीक ढंग से रहना, ठीक ढंग से कहना व जरूरत पड़ने पर सहना आ जाए तो चित्त समाधि बरकरार रह सकती है। साध्वीश्री मलयविभाजी ने सहिष्णुणता की अनुप्रेक्षा कराई। साध्वीश्री राकेशकुमारीजी ने प्रेरणादायी पाथेय प्रदान किया। मुख्य अतिथि श्री हेमेन्द्र जोशी ने आचार्य श्री महाप्रज्ञ के महान अवदान प्रेक्षाध्यान, कायोत्सर्ग आदि का उल्लेख किया। मंच का संचालन साध्वीश्री विपुलयशाजी ने किया।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, बालाजबाद

बालाजबाद सभा, तमिलनाडु में होली चातुर्मास के अवसर पर दिनांक 17 मार्च, 2014 को कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें साध्वीश्री कुंथुश्रीजी ने सभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि होली रंगों का त्यौहार है, परंतु इस अवसर पर आध्यात्मिक रंगों से भी होली खेली जा सकती है। हमारे भाव लेश्या शुद्ध रहें, यह प्रयास हो। साध्वीवृन्द द्वारा 'होली आई रे, माने घणी सुहाई रे' का सामूहिक संगान किया गया। श्री जयपाल जी, ए.पी. कांचीपुरम ने मनुष्य जीवन की सार्थकता पर प्रस्तुति दी। मुख्य वक्ता श्री महावीर दरला ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री पुखराज बडोला ने की। बैंगलोर सभा के वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री बदरीलाल पितलिया व मेवाड़ कान्फ्रेन्स के सहमंत्री श्री सुरेश दक भी इस अवसर पर उपस्थित थे। श्री सुरेश मुथा, श्री कांतिलाल पीपाडा, श्री सुनील धारीवाल, श्री दर्शन धारीवाल आदि ने सहभागिता की। संचालन गीता धारीवाल ने किया।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, नोखा

नोखा सभा द्वारा चारित्रात्माओं की रास्ते की सेवा की दिशा में उल्लेखनीय कार्य किए जा रहे हैं। गंगाशहर में मर्यादा महोत्सव संपन्न होने के पश्चात नोखा की ओर से जाने वाले साधु-साध्वियों के3 3ि सघाड़ोंक ीर ास्तेक ीस ेवार ाशिसरके ब ादत ाथाअ लाय (नागौर) तक लगभग 50 किमी तक नोखा सभा द्वारा की गई। प्रत्येक सिंघाड़े के साथ नोखा के श्रावक-श्राविकाओं ने लगभग 10 से 12 किमी तक पैदल विहार की सेवा भी की है। उल्लेखनीय है कि मर्यादा महोत्सव से पूर्व नोखा की ओर से गंगाशहर जाने वाले साधु-साध्वियों के 26 सिंघाड़ों की रास्ते की सेवा भी नोखावासियों ने पूर्ण जिम्मेदारी के साथ की थी।

निवेदन

पूरे देश में लोकसभा के चुनाव होने जा रहे हैं जिनके माध्यम से विश्व के बृहत्तम लोकतंत्र की सर्वोच्च संस्था के प्रतिनिधियों का चुनाव होगा। इन चुनावों के परिप्रेक्ष्य में अणुव्रत आचार-संहिता का व्यापक प्रचार-प्रसार अपेक्षित है।

जिनक्ष ेत्रोंम ेंअ णुव्रतस ामितियाँह ैं,व हाँह मारीत ेरापंथीस भाउ नकेक ार्योंम ेंप ूर्णस हयोगप्र दानक रें,य हअ पेक्षितह ै।ज िनक्ष ेत्रोंम ें अणुव्रत समितियाँ नहीं हैं, वहाँ अणुव्रत महासमिति द्वारा चुनाव सम्बन्धी अणुव्रत आचार-संहिता की प्रचार सामग्री ऐसी सभाओं को प्रेषित की जा रही है। सभाएँ उनका प्रचार-प्रसार करने में अपनी शक्ति का नियोजन करें।

कमल कुमार दुगड़
अध्यक्ष

विनोद बैद
महामंत्री

ज्ञानशाला समाचार

कटक सभा द्वारा ज्ञानशाला प्रशिक्षण शिविर का आयोजन

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, कटक के तत्वावधान में तीन दिवसीय ज्ञानशाला प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में स्थानीय ज्ञानशाला के प्रशिक्षकों एवं कुछ बहनों ने भाग लिया। शिविर में मुख्य प्रशिक्षक के रूप में कार्य करते हुए उपासक श्रेणी के राष्ट्रीय संयोजक प्रवक्ता उपासक श्री डालिमचन्द नौलखा ने तत्वज्ञान, जैनधर्म, तेरापंथ, अणुव्रत, जीवन विज्ञान, प्रेक्षाध्यान आदि विषयों का विस्तृत विवेचन किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में सभाध्यक्ष श्री हीरालाल खटेड़ तथा तेरापंथी सभा, कटक के कार्यकर्ताओं तथा क्षेत्रीय ज्ञानशाला प्रभारी श्री पानमल नाहटा का पूर्ण सहयोग रहा। श्रीमती विमला भंडारी ने प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर की संयोजिका के दायित्व का पूर्ण सजगता से निर्वाह किया। स्थानीय वरिष्ठ श्रावक श्री मंगलचन्दजी चौपड़ा व महासभा के प्रतिनिधि श्री मोहनलाल सिंघी ने क्रमशः स्वागत एवं आभार व्यक्त किया।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, सूरत द्वारा ज्ञानशाला से संबंधित कार्यक्रम

सूरत सभा द्वारा ज्ञानशाला से संबंधित कार्यक्रम तेरापंथ भवन सिटीलाईट में आयोजित किया गया, जिसमें ज्ञानशाला के विद्यार्थी सहित अनेक अभिभावक उपस्थित थे। इस अवसर पर ज्ञानशाला व्यवस्था सम्बन्धित जानकारी दी गई। कार्यक्रम में विगत9 फ रवरी,2 014क ेअ ायोजितख ेलकूदप्र ातियोगिताम ें विजेता प्रतियोगियों को पारितोषिक वितरित किया गया। सभा के मंत्री श्री संजय बैंगानी ने ज्ञानार्थियों को सम्बोधित किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में ज्ञानशाला प्रभारी श्रीमती मीनाबेन एवं श्रीमती कनक बरड़िया का विशेष सहयोग रहा। अंत में प्रशिक्षिकाओं द्वारा भावपूर्ण प्रस्तुति दी गई।

ज्ञानशाला प्रशिक्षक–प्रशिक्षण शिविर

उपासक श्रेणी के राष्ट्रीय संयोजक श्री डालिमचन्द नौलखा ने ज्ञानशाला प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर समायोजना के संदर्भ में दक्षिण गुजरात के कुछ क्षेत्रों की यात्रा की।

कामरेज : दिनांक 07-09 मार्च, 2014 को कामरेज में शिविर आयोजित हुआ। निर्धारित विषयों पर प्रतिदिन पांच घंटों का प्रशिक्षण दिया गया। ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाओं ने इसमें उत्साह से भाग लिया। इस कार्यक्रम में सूरत से ज्ञानशाला के आंचलिक संयोजक व सह-संयोजक उपासक श्री कोमल डांगी व उपासक श्री प्रवीण मेड़तवाल उपस्थित हुए। उन्होंने लोगों को ज्ञानशाला के विकास में आपसी समन्वय और तालमेल के साथ कार्य करने की प्रेरणा दी।

नवसारी : दिनांक 10-11-12 मार्च, 2014 को नवसारी में ज्ञानशाला प्रशिक्षक-प्रशिक्षण शिविर का आयोजन हुआ। इससे यहां के लोगों में विशेष उत्साह का संचार हुआ। दिनांक 12 मार्च, 2014 को रात्रि के समय आध्यात्मिक गीत-संगीत का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में नवसारी के भाई-बहनों की अच्छी उपस्थिति रही। संघीय प्रभावना की दृष्टि से यह अपने ढंग का एक विशिष्ट कार्यक्रम था, जिसकी लोगों में बहुत अच्छी प्रतिक्रिया हुई। इस कार्यक्रम में सूरत से ज्ञानशाला के आंचलिक संयोजक श्री कोमल डांगी व सह-संयोजक श्री प्रवीण मेड़तवाल उपस्थित हुए।

बारडोली : दिनांक 13-14-15 मार्च, 2014 को बारडोली में प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें संभागी बहनों ने उत्साह से भाग लिया। निर्धारित विभिन्न विषयों पर उपयोगी प्रशिक्षण प्रदान किया गया। सभा भवन में नियमित पाक्षिक प्रतिक्रमण हो, इसकी प्रेरणा दी गई। सभाध्यक्ष श्री सुजान सिंह मेहता, कोषाध्यक्ष उपासक श्री पारसमल बाफना, उपासक श्री पारसमल मेहता, उपासिका श्रीमती आशा चौरड़िया, तेयुप अध्यक्ष श्री पंकज बड़ौला तथा ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाओं व मंडल की अनेक बहनों ने कार्यक्रम को सफल बनाने में सक्रिय सहयोग किया।

आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह : गति-प्रगति

आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी का वर्षव्यापी आयोजन प्रवर्धमान है। इस अवसर पर विभिन्न स्थानों पर अणुव्रत अभियान को गति प्रदान करने हेतु विविधमुखी कार्यक्रम आयोजित हो रहे हैं। इस दिशा में आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह के मुख्य संयोजक श्री कमल कुमार दुगड़ के नेतृत्व में विभिन्न परियोजना-संयोजकों की सक्रिय सहभागिता से महासभा टीम द्वारा समर्पित भाव से कार्य किए जा रहे हैं। पूज्य प्रवर के दिल्ली प्रवास के दौरान तृतीय चरण एवं चतुर्थ चरण के अवसरों पर निम्नांकित सप्ताहव्यापी कार्यक्रमों के अतिरिक्त अनेक गरिमापूर्ण आयोजन होंगे, जिनकी रूपरेखा तैयार की जा रही है।

1. आचार्य श्री तुलसी की पुस्तकों का अंग्रेजी अनुवाद

आचार्यश्री तुलसी की अंग्रेजी में अनूदित निम्नलिखित दो पुस्तकें मुद्रण हेतु आदर्श साहित्य संघ को प्रेषित कर दी गई हैं :

1. समता की आंख - चरित्र की पांख
2. बैसाखियां विश्वास की

2. विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान की आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह समिति के कार्यक्रमों में सहभागिता

विद्या भारती संस्थान द्वारा संचालित समस्त विद्यालयों में युगप्रधान आचार्य तुलसी पुस्तक का वितरण किया जाएगा। इस हेतु उन्हें 12000 पुस्तकें निःशुल्क उपलब्ध करवा दी गई हैं।

संस्थान द्वारा प्रकाशित बोधमाला पुस्तकों में 3-4 पृष्ठ की अणुव्रत विषयक सामग्री जोड़ी जा रही है। इन पुस्तकों पर आधारित संस्कृति ज्ञान परीक्षाओं में प्रतिवर्ष 18 लाख छात्र-छात्राएं शामिल होते हैं।

इसके अलावा भी विद्या भारती संस्थान द्वारा आचार्य तुलसी के अवदानों के प्रसारण में उल्लेखनीय कार्य किए जा रहे हैं।

3. आचार्य तुलसी पार्क का शिलान्यास

पंजाब के अमलोह क्षेत्र में 18 मार्च को मुनिश्री विनयकुमारजी आलोक के सान्निध्य में आचार्य तुलसी पार्क का शिलान्यास हुआ। वहाँ के नगर निगम के प्रमुख श्री विकी मित्तल एवं समस्त पार्षदों ने 2 एकड़ भूमि पर एक वर्ष के भीतर इस पार्क को मूर्त रूप देने का निर्णय लिया। इसका संपूर्ण व्यय भार नगर निगम द्वारा वहन किया जाएगा।

4. आचार्य तुलसी आलेख प्रकाशन

रायपुर में श्री राजेन्द्र सेठिया के प्रयासों से सनस्टार नामक दैनिक पत्र में एक महान संत शीर्षक से आलेख प्रतिदिन प्रकाशित हो रहे हैं।

5. इन्दौर में कन्या सुरक्षा सर्किल का लोकार्पण

आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी के अवसर पर अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के तत्वावधान में एवं तेरापंथ महिला मंडल इन्दौर के आयोजकत्व में अन्तरराष्ट्रीय महिला दिवस के दिन कन्या सुरक्षा सर्किल का लोकार्पण किया गया। इस अवसर पर अ.भा.तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्ष श्रीमती सूरज बरड़िया उपस्थित थीं।

6. अणुव्रत संकल्प यात्रा

दक्षिणांचल अणुव्रत संकल्प यात्रा

मार्च महीने में तमिलनाडु में दक्षिणांचल संकल्प यात्रा के विविध कार्यक्रम आयोजित हुए। समणी कंचनप्रज्ञाजी, समणी गौतमप्रज्ञाजी एवं समणी रश्मिप्रज्ञाजी के सान्निध्य में **3 मार्च, 2014** को मैसूर के मंडिया स्थित अभिनव भारती स्कूल में अणुव्रत संकल्प यात्रा का कार्यक्रम आयोजित हुआ, जिसमें लगभग 300 विद्यार्थी, शिक्षक एवं श्रावक-श्राविकाएँ तथा अणुव्रत संकल्प यात्रा से जुड़े लोग उपस्थित थे। इस अवसर पर विद्यालय को अणुव्रत पट्ट प्रदान किया गया तथा विद्यार्थियों को अणुव्रत नोटबुक वितरित की गई।

दिनांक4 मार्च,2 014 को मैसूर के पांडवपुरा स्थित एल. के. आर. इंगलिश मीडियम हायर सेकेंडरी स्कूल में कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर विद्यालय को अणुव्रत पट्ट प्रदान किया गया तथा विद्यार्थियों को अणुव्रत नोटबुक वितरित की गई। इसी दिन रात्रि के समय पांडवपुरा स्थित तेरापंथी सभा भवन में कार्यक्रम आयोजित हुआ, जिसमें समाज के लगभग 150 सदस्यों ने प्रतिभागिता की।

दिनांक 5 मार्च, 2014 को मैसूर के रंगनाथ सामुदायिक भवन से अणुव्रत संकल्प यात्रा प्रारंभ हुई। रात्रि में श्रीरंगपट्टन में तेरापंथी सभा भवन में कार्यक्रम आयोजित हुआ, जिसमें समणीवृंद के सान्निध्य में प्रोजेक्टर के माध्यम से अणुव्रत से संबंधित वृत्तचित्र का प्रदर्शन किया गया। लगभग 120 लोगों से इस कार्यक्रम में सहभागिता की।

दिनांक 6 मार्च, 2014 को मैसूर के चामराजनगर के महावीर भवन में संध्या समय अणुव्रत संकल्प यात्रा रैली पहुँची, जिसमें लगभग 100 सदस्यों ने प्रतिभागिता की। समणीवृंद के सान्निध्य में कई कार्यक्रम आयोजित किए गए और वृत्तचित्र के माध्यम से अणुव्रत से संबंधित विभिन्न संकल्पों को दर्शाया गया।

दिनांक 7 मार्च, 2014 को मनसा स्कूल गुंडलुपे, मैसूर में कार्यक्रम आयोजित हुआ, जिसमें लगभग 700 विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं श्रावक-श्राविकाओं ने भाग लिया। समणीवृंद ने योग एवं ध्यान का प्रशिक्षण दिया और अणुव्रत के संबंध में प्रभावी वक्तव्य रखा। अंत में विद्यालय को अणुव्रत पट्ट प्रदान किया गया तथा विद्यार्थियों को अणुव्रत नोटबुक वितरित की गई।

दिनांक8 मार्च,2 014 को मैसूर के ननजानगुड स्थित तेरापंथ सभा भवन से अणुव्रत रैली प्रारंभ हुई। समणी जी ने तेरापंथ भवन में अणुव्रत संकल्प यात्रा के महत्व पर प्रकाश डाला तथा अणुव्रत के नियमों की चर्चा की और उसके पालन करने पर जोर दिया। इस अवसर पर वृत्तचित्र भी दिखाई गई।

दिनांक 9 मार्च, 2014 को मैसूर सभा भवन से अणुव्रत संकल्प यात्रा प्रारंभ हुई और जेएसएस सुत्तुर मठ स्कूल, मैसूर में पहुँची। वहाँ लगभग 5000 विद्यार्थियों, शिक्षकों तथा श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति में विविध कार्यक्रम आयोजित हुए। समणी जी द्वारा योग, ध्यान आदि के प्रशिक्षण प्रदान किए गए। इस अवसर पर दक्षिणांचल संकल्प यात्रा के संयोजक श्री दीपचन्द नाहर, सहसंयोजक श्री राजेश चावत, मैसूर के संयोजक श्री शान्तिलाल नौलखा ने अणुव्रत संकल्प यात्रा के संबंध में अपने विचार प्रकट किए। विद्यालय को अणुव्रत पट्ट भेंट किया गया और विद्यालय के विद्यार्थियों को नोटबुक वितरित की गई।

दिनांक 10 मार्च, 2014 को परेश जैन स्कूल, एम. आर. मोहल्ला में कार्यक्रम आयोजित हुआ, जिसमें लगभग 500 विद्यार्थियों ने प्रतिभागिता की। समणी जी ने विद्यार्थियों को ध्यान शक्ति को बढ़ाने तथा मन को एकाग्र करने का प्रशिक्षण दिया और उन्हें शांतिपूर्ण जीवन जीने की पद्धति बताई। समणी जी द्वारा दिए गए व्याख्यान का अनुवाद श्री प्रकाश दक एवं श्री पिंटू नंगावत द्वारा क्षेत्रीय भाषा में किया गया।

दिनांक 11 मार्च, 2014 को जेएसएस कॉलेज फॉर वुमन, मैसूर में अणुव्रत संकल्प यात्रा का कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें लगभग 350 छात्राओं एवं शिक्षक-शिक्षिकाओं ने भाग लिया। समणी जी ने अणुव्रत पर प्रभावी वक्तव्य रखा। कॉलेज के

निदेशक श्री बी. नीराजन मूर्ति ने अपना प्रभावी वक्तव्य प्रस्तुत किया और इस महान उद्देश्य के साथ निकाली गई रथ यात्रा के लिए समणी जी के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया। क्षेत्रीय संयोजक श्री शांतिलाल नौलखा और श्री प्रकाश दक ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

दिनांक 12 मार्च, 2014 को महावीर सभा भवन, पेरियापट्टन, मैसूर से अणुव्रत संकल्प यात्रा प्रारंभ हुई। तेरापंथ भवन में आयोजित कार्यक्रम में समणीवृंद द्वारा अणुव्रत संकल्प यात्रा के महत्व पर प्रकाश डाला गया। इस अवसर पर वृत्तचित्र का भी प्रदर्शन किया गया।

दिनांक 13 मार्च, 2014 को शास्त्री पब्लिक स्कूल, हुंसूर, मैसूर में कार्यक्रम आयोजित हुआ, जिसमें लगभग 1000 विद्यार्थियों एवं शिक्षकों ने भाग लिया। कॉलेज के प्राचार्य श्री रविशंकरन्ेइ सअ वसरप् ारअ पनेव िचाररखेअ ौरस् मणीज ी केप्र ातिध न्यवादज्ञ ापितक िया।स मणीज ीद्व ारायो गए वंध यान का प्रशिक्षण दिया गया। विद्यालय को अणुव्रत पट्ट भेंट किया गया और विद्यार्थियों को नोटबुक वितरित की गई।

दिनांक 14 मार्च, 2014 को अणुव्रत संकल्प यात्रा रैली के. आर. नगर के तालुका सब जेल में पहुँची। वहाँ लगभग 60 कैदियों के बीच विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गए। समणीवृंद ने कैदियों को शांतिपूर्ण जीवन जीने की पद्धति बताई और जीवन को उन्नत करने हेतु अणुव्रत के नियमों को अपनाने की सीख दी। जेल प्रभारी श्री लोकेश भाई, हेड वार्ड श्री नौगी गौड़ा तथा जेल के एक कैदी ने भी अपने विचार रखे। इसी दिन के.आर. नगर के भारती विद्या मंदिर में भी कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें लगभग 300 विद्यार्थियों एवं शिक्षकों ने भाग लिया। समणीजी ने अणुव्रत पर प्रभावी प्रवचन दिया, जिसे श्री प्रकाश दक एवं श्री पिंटू नंगावत ने हिंदी से कन्नड़ में अनुवाद किया। स्कूल के प्रिंसिपल श्री चन्द्रजी ने भी अपने विचार व्यक्त किए। रात्रि समय प्रोजेक्टर के माध्यम से वृत्तचित्र दिखाया गया, जिसमें नशामुक्ति, बेटी बचाओ, असली आजादी अपनाओ आदि विषयों को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया गया। विद्यालय को अणुव्रत पट्ट भेंट किया गया और विद्यार्थियों में नोटबुक वितरित की गई।

दिनांक 20 मार्च, 2014 को अणुव्रत संकल्प यात्रा से संबंधित कार्यक्रम ईटा गार्डेन अपार्टमेंट, मागड़ी रोड में आयोजित किया गया। इस अवसर पर व्यक्तित्व विकास कार्यशाला का आयोजन किया गया और वृत्तचित्र का प्रदर्शन किया गया।

दिनांक 21 मार्च, 2014 को अणुव्रत संकल्प यात्रा रैली बेंगलुरु के चामराजपेट स्थित जनता विद्यालय पहुँची। समणी जी द्वारा जीवन विज्ञान और अणुव्रतों को जीवन में अपनाने की प्रेरणा दी गई, जिसका कन्नड़ में अनुवाद श्री चन्द्रशेखर द्वारा किया गया। श्री चिदगन्ना स्वामी ने अणुव्रत के महत्व पर प्रकाश डाला और विद्यार्थियों को अपने जीवन में अणुव्रत के व्रतों का पालन करने हेतु प्रेरित किया। अणुव्रत समिति के अध्यक्ष श्री प्रकाशचंद लोढ़ा, संयोजक श्री दीपचंद नाहर, श्री राजेश चावत, मंत्री श्री रामलाल गन्ना आदि ने भी अपने वक्तव्य रखे। इस अवसर पर जनता विद्यालय को अणुव्रत पट्ट भेंट किया गया और विद्यार्थियों को नोटबुक एवं पाठ्य सामग्री वितरित की गई।

दिनांक 24 मार्च, 2014 को अणुव्रत संकल्प यात्रा का कार्यक्रम बेंगलुरु के महाराणी कॉलेज में आयोजित किया गया, जिसमें समणी कंचनप्रज्ञाजी एवं गौतमप्रज्ञाजी ने स्लाइड एवं प्रोजेक्टर के माध्यम से व्यक्तित्व विकास के बारे में जानकारी प्रदान की। कॉलेज के प्रिंसिपल श्री रविकुमार ने स्वागत करते हुए अणुव्रत के महत्व को प्रकट किया। टीपीएफ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री संजय धारीवाल ने अणुव्रत के नियमों की जानकारी देते हुए संकल्प पत्र भरवाए। इस अवसर पर कॉलेज को अणुव्रत पट्ट भेंट किया गया और विद्यार्थियों को अणुव्रत नोटबुक एवं अन्य सामग्री वितरित की गई।

दिनांक 30 मार्च, 2014 को अणुव्रत संकल्प यात्रा बेंगलुरु के शेषाद्रिपुरमक ॉलोनीम ेंप हुँची।स मणीवृंदके न ेतृत्वम ेंस्थानीय सभा के अध्यक्ष श्री गौतम कोठारी के प्रवास स्थल पर रात्रि 8 बजे से 9.30 तक कार्यक्रम आयोजित हुआ। समणी कंचनप्रज्ञा जीन ेअ पनेउ द्बोधनम ेंअ णुव्रतोंके प ालनक ीप्र ेरणाद ी।इ स

अवसर पर नशामुक्ति अभियान, आओ अणुव्रती बनो, असली आजादी अपनाओ, बेटी बचाओ, आचार्य तुलसी जीवन दर्शन आदि पर वृत्तचित्र दिखाया गया। कार्यक्रम में श्री गौतम कोठारी, श्री विजयराज मरोठी आदि ने भी अपने विचार रखे।

दक्षिणांचल में अणुव्रत संकल्प यात्रा के दौरान अलग-अलग क्षेत्रों में रैलियों का आयोजन हुआ। रथ यात्रा के सफल संचालन में दक्षिणांचल संकल्प यात्रा के संयोजक श्री दीपचन्द नाहर, सहसंयोजक श्री राजेश चावत, मैसूर के संयोजक श्री शान्तिलाल नौलखा, श्री प्रकाश दक एवं क्षेत्रीय कार्यकर्ताओं के प्रयास सराहनीय रहे।

पूर्वांचल अणुव्रत संकल्प यात्रा

आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह के आयोजन के क्रम में पूर्वांचलम ेंअ णुव्रतस ंकल्पय ात्राप ूरेउ त्साहके स ातग ितिशील है। यह यात्रा रथ दिनांक 1 मार्च, 2014 को नेपाल के राजविराज, दिनांक 2 मार्च, 2014 को इनरवा (विराटनगर), दिनांक 6 मार्च, 2014 को पश्चिम बंगाल के जलपाईगुड़ी एवं मैनागुड़ी, दिनांक 7 मार्च, 2014 को चेमरावेंड/धूपगुड़ी, दिनांक 11 मार्च, 2014 को अलीपुरद्वार, दिनांक 12 मार्च, 2014 को फालाकाटा, दिनांक 13 मार्च, 2014 को दिनहाटा, दिनांक 14 मार्च, 2014 को कूचबिहार में प्रवेश किया। अणुव्रत संकल्प यात्राके द ौरानस ामणीज योतिप्रज्ञाजीव ास ामणीम ानसप्रज्ञाजीके नेतृत्व में भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में रैलियों का आयोजन हुआ। समणीद्वय ने अपने प्रेरक उद्बोधन से जन समुदाय को अणुव्रत के महान संकल्पों से अवगत कराया। स्थानीय विद्यालयों को अणुव्रत पट्ट भेंट किए गए और विद्यार्थियों को नोटबुक एवं पाठ्य सामग्री वितरित की गई। रथ यात्रा के सफल संचालन में पूर्वांचल संकल्प यात्रा के संयोजक श्री तुलसी दुगड़ एवं क्षेत्रीय कार्यकर्ताओं के प्रयास सराहनीय रहे।

दिनांक 14 मार्च, 2014 को अणुव्रत संकल्प यात्रा रथ ने घुसानी में प्रवेश किया। अणुव्रत की महान शिक्षा देते हुए सुसज्जित रथ को देख सैकड़ों लोगों का ध्यान उसकी ओर आकर्षित हुआ। मुख्य चौक पर कार्यक्रम रखा गया। सभी संप्रदायों के भाइयों की बड़ी भीड़ के बीच समणी निर्देशिका मलयप्रज्ञाजी ने "अनैतिक कार्यों को छोड़ो - जीवन को सही दिशा में मोड़ो" विषय पर प्रेरणाप्रद उपदेश दिया, जिसे सुनकर अनेक व्यक्तियों ने इन नियमों को ग्रहण करने, मदिरा, मांस आदि न खाने का व्रत लिया।

दिनांक 15 मार्च, 2014 को कूचबिहार स्थित स्थानीय सभा में अणुव्रत रैली का कार्यक्रम रखा गया। रैली जैन मन्दिर से मीनाकुमारी चौक, पावरहाउस चौक, महाभवानी चौक, पुलिस चौक से हरीशपाल चौक होती हुई पुनः जैन भवन पहुंची। समणी निर्देशिकाजी ने आचार्य तुलसी के अवदानों का उल्लेख किया और अणुव्रत के सर्वव्यापी, सर्वकालिक तथा सार्वभौमिक स्वरूप की चर्चा करते हुए लोगों को उन्हें अपनाने की प्रेरणा दी। इस अवसर पर लगभग 155 भाई-बहनों ने अणुव्रत संकल्प पत्र भरेअ ौरल गभग1 000स ंकल्पप ात्रभ ारकरभ ेजनेक ास ंकल्प व्यक्त किया गया। श्री कन्हैयालाल भूरा ने अणुव्रत प्रचार-प्रसार तथा संकल्प यात्रा में सहभागिता एवं सक्रियता प्रकट की।

दिनांक 16 मार्च 2014 को अणुव्रत संकल्प यात्रा रथ ने असम के धुबड़ी क्षेत्र में प्रवेश किया, जहाँ स्थानीय भाई-बहनों ने उसका हार्दिक स्वागत किया।

दिनांक 18 मार्च, 2014 को अणुव्रत रैली तेरापंथ भवन से रवाना होकर डी. डी. रोड, एन. एस. रोड, जी. टी. रोड होते हुए पुनः तेरापंथ भवन में पहुँची। रैली में स्थानीय महिला मंडल की सदस्याओं, ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों एवं किशोर संघ के सदस्यों ने अपने-अपने गण-परिवेश में रैली में सहभागिता की। संपूर्ण रैली का मनमोहक रूप जन सामान्य का ध्यान आकर्षित कर रहा था। अणुव्रत घोष एवं अणुव्रत गान के साथ उल्लास के माहौल में रैली सम्पन्न हुई।

दिनांक 20 मार्च, 2014 को धुबड़ी विद्यालय में लगभग 300 विद्यार्थियों के बीच अणुव्रत कार्यक्रम रखा गया। कार्यक्रम में प्रिंसिपल महोदय एवं अन्य अध्यापक वर्ग भी उपस्थित थे।

स्थानीय महिला मण्डल, युवक परिषद एवं सभा के कार्यकर्ता भी कार्यक्रम में उपस्थित थे। इस अवसर पर विद्यार्थियों ने नकल न करने का संकल्प लिया। कुछ बच्चों ने मांस न खाने का प्रण लिया। 300 विद्यार्थियों एवं शिक्षकों ने अणुव्रत संकल्प ग्रहण किए।

इस अवसर पर एक सार्वजनिक अभिनन्दन कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में श्री कुमदचन्द्र कलिता, जिलाधीश, धुबड़ी, श्री मृदुलानन्द शर्मा, एस. पी., श्री परशुराम दुबे तथा डेवलपमेंट कमिटी के चेयरमैन भी उपस्थित थे। कार्यक्रम में लगभग 700 लोग उपस्थित थे। समणी नीतिप्रज्ञाजी ने "मत बांटो इंसान को" गीत प्रस्तुत किया।

दिनांक 22 मार्च, 2014 को अणुव्रत संकल्प यात्रा रथ बिलासीपाड़ा पहुँचा, जहाँ स्थानीय लोगों ने उसका हार्दिक स्वागत किया। इस अवसर पर कई कार्यक्रम आयोजित किए गए और वृत्तचित्र के माध्यम से आचार्य तुलसी के अवदानों से जन सामान्य को परिचित कराया गया।

दिनांक 24 मार्च, 2014 को अणुव्रत संकल्प यात्रा का रथ चापड़ पहुँचा। वहाँ समणी ज्योतिप्रज्ञाजी व समणी मानसप्रज्ञाजी के नेतृत्व में रैली निकाली गई और कार्यक्रम आयोजित किए गए। प्रोजेक्टर द्वारा वृत्तचित्र दिखाया गया, जिसे देखकर लोग आचार्य तुलसी द्वारा जन हित एवं राष्ट्र हित में किए गए उल्लेखनीय कार्यों से अवगत हुए।

दिनांक 27 मार्च, 2014 को बंगाईगाव (असम) में विशाल रैली का आयोजन हुआ, जिसमें हिन्दी हाई स्कूल व हरिराम महेश्वरी स्कूल के करीब 500 बच्चे जयघोष करते हुए चल रहे थे। ज्ञानशाला, कन्या मंडल, महिला मंडल, तेयुप, सभा के सभी विशिष्ट महानुभाव रैली की शोभा बढ़ा रहे थे। रैली के सबसे अंत में अणुव्रत संकल्प यात्रा रथ गतिमान था। विशाल रैली का नेतृत्व कर रही थीं समणी ज्योतिप्रज्ञाजी व समणी मानसप्रज्ञाजी।

उसी दिन हिन्दी हाई स्कूल में प्रभावी ढंग से कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें लगभग 300 विद्यार्थी, शिक्षक व स्थानीय भाई-बहन उपस्थित थे। 'असली आजादी अपनाओ' के प्रेरणादायक प्रदर्शन के साथ कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। समणी ज्योतिप्रज्ञाजी ने अणुव्रत संकल्प यात्रा के उद्देश्यों को बतलाया। उन्होंने आचार्य तुलसी के व्यक्तित्व से परिचित कराते हुए कहा कि उनकी शताब्दी मनाने का अर्थ है उनके द्वारा किए कार्यों को जीवन्त बनाना। उन्होंने बच्चों को बुद्धि विकास हेतु कुछ मंत्र, आसन व श्वासप्रेक्षा के प्रयोग करवाए। उन्होंने बच्चों को अनुशासित व सहनशील बनकर श्रम करने की सीख दी और विद्यार्थी व शिक्षक अणुव्रतों की चर्चा करते हुए सबको नशामुक्त रहने की प्रेरणा दी, जिसके फलस्वरूप कई विद्यार्थियों ने अणुव्रत नियमों को स्वीकार किया। विद्यालय के प्रिंसिपल को अणुव्रत आचार संहिता का पट्ट भेंट किया गया।

समणी निर्देशिका ज्योतिप्रज्ञाजी व समणी मानसप्रज्ञाजी के सान्निध्य में संध्या समय एक भव्य एवं प्रभावक कार्यक्रम आयोजित हुआ, जिसमें मुख्य रूप से डिप्टी कमिश्नर श्री वीरेन्द्र कुमार मित्तल व कमांडेंट श्री राजीव चौधरी उपस्थित थे। कार्यक्रम में तेरापंथी के अतिरिक्त महेश्वरी, पंजाबी समुदाय के भाई भी उपस्थित थे। कार्यक्रम के दौरान समणी मानसप्रज्ञाजी ने अपने काव्यपाठ से सभी श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। समणी ज्योतिप्रज्ञाजी ने अपने ओजस्वी वक्तव्य में कहा कि आचार्य

तुलसी सहिष्णुता, नवीनता, पुरुषार्थ, प्रेम व प्रेरणा का दूसरा नाम है। आचार्य श्री तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन का सूत्रपात कर जैन धर्म को जन धर्म बनाने का प्रयास किया। अणुव्रत चरित्र निर्माण का आंदोलन है। किसी भी देश की ऊंचाई उसके सैन्यबल, संख्याबल व धनबल से नहीं, अपितु उसके चरित्र बल से मापी जाती है। उन्होंने अणुव्रत आचार संहिता के ग्यारह नियमों को आकर्षक चित्रों के माध्यम से प्रस्तुत किया। अनेक भाई-बहनों ने अणुव्रत के नियमों को स्वीकार किया। डिप्टी कमिश्नर श्री वीरेन्द्र कुमार मित्तल ने कहा कि मैं दस नियमों का पालन करता हूँ और आगे भी करूंगा। उन्होंने अणुव्रत संकल्प यात्रा की वर्धमानता की मंगलकामना की।

पश्चिमांचल अणुव्रत संकल्प यात्रा

पश्चिमांचल में समणी निर्देशिका शारदाप्रज्ञाजी तथा समणी रत्नप्रज्ञाजी के कुशल नेतृत्व में अणुव्रत संकल्प यात्रा अबाध गति से अग्रसर है और समणीद्वय के सान्निध्य में विभिन्न क्षेत्रों एवं स्थानों पर विविधरूपेण कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। दिनांक 2 मार्च, 2014 को महाराष्ट्र के ईचलकरंजी में अणुव्रत संकल्प यात्रा रथ का आगमन हुआ, जहाँ कोल्हापुर, जयसिंगपुर, तासगांव, सांगली, माधवनगर आदि निकटवर्ती क्षेत्रों से बड़ी संख्या में तेरापंथ के श्रावक-श्राविकाओं ने अणुव्रत रथ का स्वागत किया। उनके अतिरिक्त अन्य समुदायों के स्थानीय लोगों ने भी इस मनोरम रथ का अवलोकन किया। प्रातः 11 बजे से 2 बजे तक अणुव्रत पर रंगोली का आयोजन किया गया, जिसमें 14 सदस्यों ने भाग लिया। सुखद प्रसंग यह था कि उक्त कार्यक्रम में तेरापंथी बहन केवल एक ही थी, अन्य बहनें महाराष्ट्रीय एवं अन्य समुदायों की थीं। बहुत अच्छी प्रतिस्पर्धा रही। दोपहर 3 से 6 बजे तक समणी जी के सान्निध्य में कार्यक्रम रखा गया, जिसमें उक्त सभी सदस्यों ने अपनी प्रस्तुति

दी। ज्ञानशाला के बालक-बालिकाओं ने लघु नाटिका एवं महिला मंडल ने अणुव्रत पर संवाद प्रस्तुत किया।

यात्रा के दौरान आसपास के क्षेत्र में अणुव्रत संकल्प फार्म भरे गए, जिसकी सूचना निम्न प्रकार से है –

कोल्हापुर	-	1221
जयसिंगपुर	-	393
माधवनगर	-	63
तासगांव	-	50
ईचलकरंजी	-	81

पश्चिमांचल अणुव्रत संकल्प यात्रा के संयोजक श्री रमेश सुतरिया और स्थानीय तेरापंथी सभा, तेयुप, महिला मंडल आदि के सक्रिय योगदान से अणुव्रत संकल्प यात्रा क्रमशः प्रवर्धमान है और आचार्य तुलसी के अवदानों से अवगत कराकर उस क्षेत्र के लोगों के वैयक्तिक एवं सामाजिक चरित्रोत्थान में अभूतपूर्व योगदान कर रहा है।

सूचना

अणुव्रत आचार्य श्री तुलसी का प्रमुख अवदान है। आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष के परिप्रेक्ष्य में हमारा यह प्रयास होना चाहिए कि अणुव्रत संकल्प अभियान से अधिकाधिक व्यक्ति जुड़ें।

इस संदर्भ में अणुव्रत संकल्प पत्र सभी सभाओं को प्रेषित किए गए हैं। सभाएँ अपने क्षेत्र में इस कार्य को गतिमान रखते हुए संकल्प पत्र भरवाने का सघन अभियान चलाएँ। इसमें अणुव्रत समिति के अतिरिक्त स्थानीय महिला मंडल, तेयुप तथा अन्य संघीय संस्थाओं को भी जोड़ने का प्रयास करें।

कमल कुमार दुगड़
अध्यक्ष

विनोद बैद
महामंत्री

महासभा की विभिन्न प्रवृत्तियों में अनुदान की राशि निम्नलिखित अनुदानदाताओं से अथवा उनके सद्प्रयासों एवं प्रेरणा से प्राप्त हुए। (दिनांक : 01.03.2014 से 31.03.2014)

आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह

4,00,000/- प्रेमचन्द चौपड़ा चैरीटेबल ट्रस्ट (श्री जसकरण चोपड़ा), सूरत

1,00,000/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, सरदारपुरा-जोधपुर

1,00,000/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, विजयवाड़ा

1,00,000/- श्री प्रकाश जैन, सूरत

1,00,000/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, केसिंगा

1,00,000/- श्री पारसमल सांड, फरीदाबाद

50,000/- श्री झमकलाल ताराचन्द भंडारी, पेटलावद

11,000/- श्रीमती नन्दिनी के. झवेरी, सूरत

स्मारक स्थल

1,00,000/- सुखी देवी भोजराज पटावरी चैरीटेबल ट्रस्ट (श्री कन्हैयालाल पटावरी), कोलकाता

1,00,000/- श्री नेमचन्द बैद, कोलकाता

51,000/- श्री पूनमचन्द चौरड़िया, टमकोर

11,000/- श्री अजय बंसल, पटियाला

औषधालय

50,000/- मानकचन्द चोरड़िया चैरीटेबल ट्रस्ट, (श्री बजरंग बिनोद चोरड़िया) कोलकाता

महासभा की विविध गतिविधियों हेतु

7,50,000/- श्री विजय सिंह छत्तर सिंह कमल सिंह नवीन पारख, कोलकाता

1,50,000/-श्री पन्नालाल बैद, जयपुर

51,000/- शुभेच्छु, कोलकाता

21,000/- श्री शुभकरण हंसराज बैद, कोलकाता

5,100/- श्री मोतीलाल मणोत, कोलकाता

ज्ञानशाला पुरस्कार

51,000/- बच्छराज नाहटा मेमोरियल ट्रस्ट, (श्री विमल कुमार नाहटा) गुवाहाटी

शताब्दी अक्षय निधि कोष

16,00,000/- सर्वश्री बुधमल, सुरेन्द्र, तुलसी, कमल दुगड़, रतनगढ़ - कोलकाता

(àoaUmòmoV Ir_Vr gmohZr Xodr XþJ‹S>)

2,50,000/- श्री मोतीलाल भूरा परिवार, कोलकाता

11,000/- श्रीमती प्रमिला पारख, कोलकाता

5,000/- श्री राजकुमार पारख, कोलकाता

5,000/- श्री हितेश पारख, कोलकाता

सहभागिता योजना

31,000/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, सूरत

20,000/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, सरदारपुरा-जोधपुर

18,725/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, लिलुआ

12,400/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, पर्वत पाटिया

10,500/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, सेमड़

9,750/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, संगरुर

9,650/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, टोहाना

9,511/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, जगरांओ

8,900/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, पटना सिटी
7,500/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, पटियाला
7,500/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, समाना मंडी
7,100/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, रिसड़ा
6,900/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, खन्ना
5,000/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, सुनाम
5,000/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, शेरपुर
4,000/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, अबोहर
3,100/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, अहमदगढ़
3,100/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, बरनाला
3,100/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, लेहरागागा
3,000/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, फिलौर
3,000/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, भवनीगढ़
3,000/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, धुरी
2,500/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, बरेटा मंडी
2,100/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, धमोला
2,100/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, लोंगोवाल
2,100/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, तपामंडी
2,000/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, खानौरी मंडी
1,100/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, बुधलाडा
1,100/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, शेरो
1,100/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, बरबर
1,100/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, मनसा
1,100/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, भीखी
1,100/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, निहालसिन्धवाला
1,100/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, बदनीकलां
1,100/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, रायकोट
500/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, सुधार
500/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, बसैन
500/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, शेखपुरा

सूचना

महासभा के साथ संबद्ध (एफिलिएटेड) सभी सभाओं को सूचित किया जाता है कि जिन सभाओं के एफिलिएशन की 5 वर्ष की अवधि पूरी हो चुकी है, उन सभाओं को नियमानुसार 5 वर्ष के उपरांत पुनः एफिलिएशन करवाना आवश्यक है। जिन सभाओं ने नवीनीकरण हेतु अभी तक एफिलिएशन फॉर्म एवं शुल्क नहीं भेजे हैं, उन सभाओं से निवेदन है कि वे यथाशीघ्र फॉर्म एवं शुल्क की राशि का ड्राफ्ट भिजवाने की व्यवस्था करें ताकि महासभा से उन्हें नया एफिलिएशन सर्टिफिकेट प्रेषित किया जा सके।

कृपया ज्ञात रहे कि नवीनीकरण हेतु जिन सभाओं के एफिलिएशन फॉर्म एवं शुल्क हमें प्राप्त नहीं होंगे उन्हें सर्टिफिकेट जारी नहीं किया जाएगा और उस सभा को केन्द्रीय मान्यता प्रदान नहीं की जाएगी।

विनोद बैद
महामंत्री

कथामृत

(पूज्य आचार्य श्री महाश्रमण अपने पावन प्रवचन के दौरान कभी-कभी लघुकथाओं के माध्यम से श्रोताओं को जीवन के लिए कुछ आचरणीय शिक्षा प्रदान करते हैं। वे लघुकथाएं इतनी रोचक एवं मर्मस्पर्शी होती हैं कि श्रोताओं के मन पर उनका प्रभाव दीर्घ काल तक बना रहता है। हम उन्हें यहाँ पुनः प्रस्तुत कर उन कहानियों के माध्यम से श्रोताओं को दी गई सीख को अभ्युदय के पाठकों तक पहुँचाना चाहते हैं – संपादक)

एकाक्षी मां

एक महिला थी। उसकी एक मात्र सन्तान उसका पुत्र था। अपनी गरीबी में भी उसने अपने पुत्र का अच्छे रूप में लालन-पालन किया और उसे उच्च शिक्षा दिलाई। कालान्तर में वह लड़का राजकीय सेवा में उच्च पद पर प्रतिष्ठित हो गया। मां उसी के साथ शहर में रहने लगी। एक बड़े अफसर के रूप में नियुक्त होने के बाद उस युवक के रहन-सहन में ही नहीं, उसके सोच-विचार और व्यवहार में भी परिवर्तन आ गया। उच्च वर्गीय लोगों का प्रायः उसके यहां आना-जाना होता। ग्रामीण पृष्ठभूमि की महिला का अपनी मां के रूप में लोगों से परिचय कराने में उसे इतना संकोच नहीं होता, जितना इस बात से कि उसकी मां एकाक्षी थी। वह वृद्धा मां अब उसे भारस्वरूप लगने लगी।

एक दिन उसने मां से कहा – "मां! तुम्हारा इस सरकारी बंगले में मन नहीं लगता होगा। क्यों न तुम्हारे लिए किसी अन्य जगह पर एक क्वार्टर की व्यवस्था कर दूं। वहां तुम आराम से रहो।" मां को एक धक्का-सा लगा। वह बेटे के मनोभाव को पहचान गई। अपनी पीड़ा को दबाकर उसने अपनी व्यवस्था अलग करने के लिए स्वीकृति दे दी। अफसर बेटे ने अपने बंगले से दूर किराये के एक क्वार्टर की व्यवस्था कर मां को वहां रख दिया। बेटे से दूर वृद्ध एकाकी महिला ने अपने जीवन के बचे-खुचे दिन काटे और एक दिन वह चल बसी।

बेटे को सूचना मिली तो उसने मां का दाह-संस्कार किया और फिर उसका पुराना टिन का बाक्स संभाला। उसमें उसे अपने नाम का एक लिफाफा मिला। लिफाफे को खोलकर देखा तो मां की लिखावट में लिखा हुआ एक पत्र था। बेटे को संबोधित कर उसने लिखा था - "बेटा! मेरे पास ऐसी कोई चीज नहीं, जिसे संभाल कर रखती। एकमात्र तुम्हीं मेरी निधि हो। मेरे जीवनयापन का तुमने प्रबंध किया और भला मुझे क्या चाहिए। यह पत्र लिखने की भी जरूरत न पड़ती, लेकिन एक बात से तुम शायद अनजान हो, वह बताकर मैं इस दुनिया से जाना चाहती हूं। तुमने अपने से अलग यहां मुझे क्यों भेजा, यह मैं उसी दिन जान गई थी। अब तुम भी मेरे एकाक्षी होने का कारण जान लो। जन्म के कुछ दिनों बाद ही तुम्हारी एक आंख में खराबी आ गई थी। मैंने आँख के विशेषज्ञ डॉक्टर को दिखाया तो उसने कहा कि 'इस बच्चे की आँख ठीक होने की संभावना लगभग समाप्त है। हां, अगर किसी दूसरे की आँख मिल जाए तो वह आँख इस बच्चे में प्रत्यारोपित की जा सकती है।' मैं साधन और सहारों से हीन गरीब विधवा किसी दूसरे की आँख का प्रबंध कहा से करती? मैंने डॉक्टर से कहा - 'आप मेरी एक आँख निकालकर मेरे बेटे को दे दें।' डॉक्टर ने ऑपरेशन कर विकारग्रस्त तुम्हारी आँख की जगह मेरी आँख प्रत्यारोपित कर दी। मेरे एकाक्षी होने का यही रहस्य है। तुम अपना ख्याल रखना।"

पत्र समाप्त होते ही लड़के की आँखों के सामने अँधेरा छा गया। पर अब करणीय कुछ नहीं था।

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा
(ISO 9001 : 2008 प्रमाणित संस्था)
3 {ÉÉSÉMÉÒVÉ SÉSÉ º]ö]¡, EòÉ±ÉEòiÉÉ - 700 001
n®¡ÉÉ¹É : 2235 7956, 2234 3598, ¡ÉCºÉ : 033 2234 3666
email: info@jstmahasabha.org